ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 13 मई 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 13 मई 2018 से 19 मई 2018

जयेष्ठ कृ. – 13 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 19, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

उमा शंकर चंपा देवी डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, महाराजगंज में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

मुजफ्फरपुर एवं बेगूसराय प्रक्षेत्र, बिहार द्वारा एक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन उमा शंकर चंपा देवी डी ए वी पब्लिक स्कूल, महाराजगंज में किया गया।

डॉ. एस. के झा तथा प्राचार्य श्री अविनाश चन्द्र झा के नेतृत्व में आयोजित इस शिविर में मुजफ्फरपुर एवं बेगूसराय प्रक्षेत्र, बिहार के 28 डी.ए.वी विद्यालयों के लगभग 1000 छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं प्राचार्यों ने भाग लिया।

चरित्र निर्माण शिविर का शुभारम्भ दिनांक 03.04.2018 को हवन–यज्ञ के उपरान्त उद्घाटन समारोह से हुआ। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री हरिकेश सिंह, कुलपति, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा थे। विशिष्ट अतिथि श्री एस. के. शर्मा, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली रहे। समारोह के मुख्य अतिथि कुलपति महोदय ने कहा कि आज के बदलते परिवेश में बच्चों को संस्कृति और समाज से जोड़कर रखना बहुत की महत्वपूर्ण है। डी.ए.वी. संस्थाएँ इस दिशा में बहुत उत्तम कार्य कर रहीं हैं। उन्होंने कहा कि वेद भारत ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति की आत्मा हैं और इनका ज्ञान सबके लिए ज़रूरी है। चरित्रवान नागरिक ही किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति और सम्पति हैं। अतः ऐसे शिविरों की आज महती आवश्यकता है।

शिविर के दौरान शिविरार्थी प्रातः 04:30 बजे से रात्रि 10:30 बजे तक आचार्यों के प्रवचन, भजन एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। शिविर में हवन–यज्ञ, मंत्रोच्चारण, योगासन, समूह भजन, वाद–विवाद प्रतियोगिता, वेद मंत्रों पर नृत्य, देशभक्ति पर आधारित कव्वाली, ओ३म् ध्वनि झाँकी, वैदिक प्रश्नोत्तरी, डायरी

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

डीएवी हाथी गेट, अमृतसर ने महात्मा हंसराज जी को स्मरण किया

डीएवी सी. सै. स्कूल हाथी गेट, में महात्मा हंसराज जी के जन्म दिवस को समर्पित यज्ञ का आयोजन किया गया। पवित्र मन्त्रोच्चारण के साथ डीएवी शिक्षण संस्थाओं की प्रगति एवं समाज कल्याण की कामनाओं के साथ हवन कुण्ड की आहुतियाँ डाली गईं।

श्री अजय बेरी ने अपने उद्बोधन में बताया कि महात्मा हंसराज जी बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि के स्वामी तथा मानवता के सेवा को समर्पित थे। स्वामी दयानन्द जी के प्रेरणा से महात्मा हंसराज जी ने आर्य समाज की सेवा का प्रण लिया। स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु उपरान्त उनकी स्मृति में सदैव जीवंत रखने के लिए 1 जून 1886 को लाहौर में प्रथम दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षण संस्थान के लिए महात्मा हंसराज ने त्याग का आदर्श स्थापित किया। उन्होंने आजीवन निःस्वार्थ भाव ने बिना वेतन लिए संस्था की सेवा की। उनके द्वारा लगाया पौधा आज एक वट् वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। लगभग 919 डीएवी एंस्थाएं पूरे भारत में ही नही अपितु विदेशों में भी छात्रों को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान कर सामाज सेवा में योगदान दे रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को महात्मा हंसराज जी के जीवन से प्रेरणा लेने की सीख दी। इस शुभ अवसर पर स्कूल के समस्त स्टॉफ सदस्यों तथा विद्यार्थियों ने मन से सहयोग। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए पाठ्य सामग्री भी भेंट की गई।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 13 मई 2018 से 19 मई 2018

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः।** देवता **अग्निः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(अङ्ग)** हे, **(अमूर)** अमूढ़, **(चिकित्वः)** ज्ञानी, **(अग्ने)** परमेश्वर!, **(मूराः)** मूढ़, **(वयं)** हम, **(महित्वं)** महत्ता को, **(न)** नहीं [जान पाते]।, **(त्वं)** तू, **(वित्से)** जानता है। [हमारा], **(वव्रिः)** रूपवान् आत्मा, **(शये)** सोया पड़ा है, **(जिह्वया)** जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, **(अदन्)** भोग करता हुआ, **(चरति)** विचरता है, **(विश्पतिः सन्)** राजा होता हुआ [भी], **(युवतिं)** प्रकृति–रूप युवति को, **(रेरिह्यते)** अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने **"जल्दी मत बनो"** पर कथा सुनाते हुए कहा श्रद्धा न हो तो ज्ञान नहीं होता। ज्ञान न हो तो मन को एकाग्रता नहीं मिलती। मन एकाग्र न हो तो ईश्वर नहीं मिलता। **"आलस छोड़ो, श्रम करो"** की बात करते हुए कहा आलस करने से कोई लाभ नहीं होता इसलिए आलस छोड़कर श्रम करना चाहिए। **"हम तो चाखा, प्रेम–रस, पत्नी के उपदेश''** नामक लघुकथा में तुलसीदास का उदाहरण देते हुए कहा हाड़ और चाम के इस शरीर से जितना प्यार करते हो यदि उतना प्रभु से करो तो कहीं के कहीं पहुंच जाओगे। यदि प्रभु के प्रति मन में प्रेम जाग उठे तो यह सब कुछ होता है।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

भगवान को कोई नहीं चाहता

नारद मुनि एक बार घूमते–घूमते स्वर्ग में गए। विष्णु महाराज वहाँ विराजमान थे। उन्होंने पूछा– "सुनाओ मुनिराज! संसार का क्या हाल है?"

नारद ने कहा– "महाराज! मैं तो आपसे पूछने लगा था कि आप कैसे भगवान् है? दुनिया में हर स्थान पर लोग आपको याद कर रहे हैं। स्थान–स्थान पर कीर्तन होते हैं, उपदेश होते हैं। मन्दिरों में आपकी पूजा होती है। लोग आपको पुकारते हैं और आप यहाँ निश्चिन्तता से बैठे हैं।"

विष्णु महाराज ने कहा– "तू भोला है नारद! लोग मुझे नहीं चाहते, किसी और को चाहते हैं।"

नारद ने कहा– "यह कैसे हो सकता है? मैंने तो देखा कि वे आपके दर्शनों को बैचेन हैं। एक बार चलकर उन्हें दर्शन दे आइए।"

विष्णु महाराज ने कहा– "नहीं! नारद! वे लोग मेरा दर्शन चाहते हैं; यह केवल कहने की बात है। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो कुछ विमान ले जाओ, जो दर्शन करना चाहता है, उसे यहाँ ले आओ। मैं स्वर्ग के द्वार पर खड़ा रहूँगा। वे मेरा दर्शन कर सकेंगे।"

नारद ने कुछ विमान लिए। एक नगर के बाहर उन्हें पृथिवी पर उतार दिया। नगर में प्रविष्ट हुए। एक स्थान पर गए। विचारने लगे– किसको स्वर्ग चलने और भगवान् के दर्शन के लिए कहूँ? सामने से कोई पैंतालीस वर्ष के एक सज्जन आते हुए दृष्टिगोचर हुए। बार–बार भगवान् का नाम ले रहे थे। नारद ने सोचा– यह व्यक्ति है, इसे ले चलता हूँ। बोले– "श्रीमान् जी! प्रभु का दर्शन करोगे? करना हो तो मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें ईश्वर का दर्शन करा सकता हूँ।"

उस व्यक्ति ने प्रसन्न होकर कहा– "प्रभु का दर्शन! प्रभु का दर्शन मिल जाए बाबा, तो मुझे चाहिए क्या?"

नारद बोले– "तो फिर आओ मेरे साथ, नगर के बाहर विमान खड़ा है, उसमें बैठो। मैं तुम्हें प्रभु का दर्शन कराऊँगा।"

वह व्यक्ति बोला– "मैं चलूँगा अवश्य, नारद जी! परन्तु आठ दिन के पश्चात् मेरे पुत्र का विवाह होने वाला है। वह हो जाए तो फिर अवश्य चलूँगा।"

नारद महाराज आठ दिन के स्थान पर पन्द्रह दिन के पश्चात् आए; बोले– "तुम्हारे पुत्र का विवाह हो गया होगा?"

वह बोला– "जी महाराज! आपकी कृपा से बहुत सुन्दर बहू मिली है। बहुत उत्तम रीति से विवाह हुआ।"

नारद ने कहा– "तो फिर आओ, चलें।"

उसने कहा– "परन्तु अभी–अभी तो विवाह हुआ है। बहू की गोद हरी हो जाए। एक बच्चा हो जाए तो मैं अवश्य चलूँगा।"

नारद ने पूछा– "अच्छा यूँ ही सही।"

एक वर्ष पश्चात् नारद जी फिर आए; बोले– "बच्चा हो गया भक्त जी?"

भक्त जी बोले– "हाँ महाराज! बहुत सुन्दर बच्चा है। मोटी–मोटी आँखें है उसकी। बटर–बटर देखता है। मेरी अँगुली पकड़ लेता है।"

नारद ने कहा– "तो आओ, अब चलें।"

भक्त ने कहा– "परन्तु महाराज! अभी तो बच्चा बहुत छोटा है। उसे कुछ बड़ा हो लेने दो, फिर चलूँगा।"

नारद 'बहुत अच्छा' कहकर चले गए। पाँच वर्ष पश्चात् फिर आए। बच्चा बड़ा हो गया था। बोले– चलो भक्त जी, अब चलें।"

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

स्वतंत्रता के उपासक महाराणा प्रताप

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

भारतीय इतिहास में मेवाड़–केसरी, स्वाभिमानी, मातृ भूमि हेतु समर्पित, स्वतंत्रता के पुजारी, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। प्रताप भारत का गौरव थे। शत्रु के सामने कभी झुके नहीं, पीछे हटे नहीं, जिनका नाम ले शत्रु के पसीने छूट जाते थे ऐसे वीर महान योद्धा थे महाराणा प्रताप। देश को ऐसे महान योद्धा पर गर्व है।

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई सन् 1540 को (अर्थात् रविवार ज्येष्ठ सुदी 3 विक्रम सम्वत्, 1597 को) चित्तौड़ दुर्ग में *राणा उदयसिंह के घर रानी जैवन्ती बाई* के गर्भ से हुआ था। यह वह समय था जब विदेशी मुगल भारत की पावन धरा को रक्तरंजित कर रहे थे, हिन्दुओं का मतान्तरण किया जा रहा था। महिलाओं के अस्तित्व से खिलवाड़ हो रहा था।

महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए अनेक कष्ट सहे, घास की रोटियाँ खाईं, जंगलों में भटके परन्तु मुगलों व मुगल शासक अकबर से कभी हार नहीं मानी। शत्रु के सामने कभी झुके नहीं, कभी पीछे नहीं हटे। हल्दी घाटी का भीषण युद्ध हुआ जहाँ मुगल सेना को धूल चटा दी थी और भारत की आन बान और शान को बनाए रखा था, मुगलों के सिर काट–काट कर हिन्दुत्व की रक्षा की थी। महाराणा प्रताप का घोड़ा बहुत स्वामीभक्त था। उसका नाम चेतक था। रणभूमि में तीव्रगति से दौड़ता था। प्रताप के इशारे पर चलता था महाराणा प्रताप शत्रु के लिए काल थे और हिन्दुओं व हिन्दुत्व के रक्षक थे।

किसी कवि ने कहा है–

होते न प्रताप तो प्रताप की न बात होती।
चर्चा न होती राजपूती आन बान की।
शंख–घड़ी घण्टा का निनाद न सुनायी देता,
यज्ञ–धूम होता न शोभा आसमान की।।
कलम–कुरान यहाँ रोज़ा व नमाज़ होते,
कथा कीर्ति शेष होती वेद न औ पुरान की।।
लोग इतिहास की किताबों से ही जान पाते,
एक कौम हिन्दू थी, धरा थी हिन्दुस्तान की।।

महाराणा प्रताप के पिता राणा उदयसिंह तथा दादा संग्राम सिंह व इससे पूर्व भी उनके पूर्वजों ने विदेशी आक्रान्ताओं से युद्ध किए जिनकी यशपूर्ण गौरवशाली गाथा कर्नल टाड व अन्य इतिहासकारों ने लिखी है।

महाराणा प्रताप के पिता उदय सिंह की रक्षा पन्ना धाय ने अपने पुत्र की बलि देकर की थी वहाँ का राजा बनवीर अत्यन्त क्रूर था। वह उदय सिंह को मारने आया तो पन्ना धाय ने अपनी सन्तान को उदय सिंह के स्थान पर सुला दिया और बालक उदय सिंह को लेकर उसे छिपाने हेतु महल से निकल गयी थी। इस प्रकार से उदय सिंह की रक्षा हुई।

महाराणा प्रताप को वीर सरदारों ने 28 फरवरी सन् 1572 को होली के दिन गोगुन्दा में राजगद्दी पर बैठाया था। उस समय देश की स्थिति अत्यन्त चिन्तनीय व भयावह थी उसके पास *न सेना थी न धन ही था।* राज्य चारों ओर से शत्रुओं से घिरा था, ऐसे में महाराणा प्रताप ने काँटों के (ताज को) मुकुट को सँभाला था जनता कष्ट में जीवन व्यतीत कर रही थी। देश भक्त सरदारों ने बैठक (सभा) कर महाराणा प्रताप को गद्दी पर बैठाने का निर्णय लिया और प्रताप से एक बड़ी जन सभा में राज्य की बागडोर सँभालने हेतु कहा कि आप मेवाड़ का राज्य सँभालें, आज जनता की यह आवाज है, मेवाड़ की जनता ने कितना बलिदान किया है। आप पन्ना धाय के उस योगदान को भूल गए जहाँ उसने उदय सिंह को बचाने हेतु अपने पुत्र का बलिदान कर दिया? क्या आप राणा सांगा व रानी करुणावती के अमर बलिदान व उनके स्वप्नों को साकार नहीं करोगे? मात्र भूमि के लिए उन्होंने अपने बलिदान दिए। जनता आपको जहाँ राजा बना कर बैठा रही है वह स्वर्ग नहीं श्मशान की भाँति जर्जर हो रहा है।

इनकी माता ने उस समय मातृ भूमि की रक्षा हेतु शपथ दिलायी कि जब तक मातृ भूमि को मुगलों से स्वतन्त्र नहीं करा लोगे स्वर्ण–चांदी के बर्तनों में भोजन नहीं करोगे। भूमि पर शयन करेंगे।

इस पर प्रताप ने कहा था कि किसी कवि के अनुसार कवि के शब्दों में–

खाऊँ न परतंत्र होकर, सोने की थालियों में।
भले हैं स्वतन्त्रता के दोना पात ढाक के।।
सहित हुलास वृक्ष तले का निवास भला।
महल ना चाहूँ लगे दास्ता पताक के।।
विप्र घनश्याम ऋषि–सिद्धि भरे राज साज।
कौन चाहता है, दिल्ली पत बरबराक के।।
चाहता नहीं स्वर्ग लोक की बादशाही।
बदले में मातृ भूमि के मुट्ठी भर राख के।।
खाऊँ न परतंत्र होकर, सोने की थालियों में।
भले हैं स्वतन्त्रता के दोना पात ढाक के।।

महाराणा प्रताप स्वतन्त्रता के परम उपासक थे। उनके अनुसार स्वतन्त्रता का अपहरण होने से सभी सुख सुविधाएँ अर्थहीन हैं मातृ भूमि की रक्षा हमारा परम कर्त्तव्य है मातृ भूमि की स्वतन्त्रता में ही मानवता है। महाराणा प्रताप स्वाभिमानी थे। राष्ट्र की रक्षा व स्वतन्त्रता आन–बान–शान मर्यादा के लिए वे प्राण हथेली पर रखकर तत्पर रहे, जबकि भारत के लगभग सभी हिन्दू राजाओं ने अपने राजमुकुट मुगल सम्राट के चरणों में रख दिए थे उनको मुगल दरबार में सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त हो गयी थीं। परन्तु भारत का वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप मुगल सम्राट के आगे नहीं झुका। उसने स्वप्न में भी समझौता करने नहीं सोची। महाराणा प्रताप ने वनवास को अपनाया, घास फूँस का भोजन प्राप्त करना स्वीकार किया, लेकिन मुगल दरबार का दास बनना स्वीकार नहीं किया। ऐसा था भारत का सपूत।

प्रताप ने मुगलों को सोचने हेतु बाध्य कर दिया कि जन व धन का बल ही कुछ नहीं होता अपितु सर्वोपरि 'आत्म बल' होता है।

हल्दी घाटी का युद्ध अत्यन्त भयानक था मैदान रक्त से लथपथ हो गया था। प्रताप व प्रताप की सेना अन्त तक लड़ते रहे थे। राणा को पराजय स्वीकार नहीं थी।

महाराणा प्रताप का इस्लाम से कोई विरोध नहीं था उनका विरोध मुगलों के अत्याचार व दानवता से था जो भारतीय धर्म संस्कृति व राष्ट्र के विरोधी थे। उनसे उनका (प्रताप का) विरोध था। उनकी सेना में मुस्लिम सरदार व लड़ाकू सैनिक भी थे। आज भी उनकी सेना का संचालन करने वाले हकीमखाँ सूर पठान को याद किया जाता है।

उनकी युद्धनीति व संगठन की नीति कुशल थी। एक श्रेष्ठ राजा के सभी गुण उनमें थे। महिलाओं का वे सम्मान करते थे। सन् 1580 में जब अब्दुर्रहीम खान खाना को अजमेर का गवर्नर बनाकर भेजा व मेवाड़ अभियान का कार्य भी सौंपा गया तब खान खाना ने अपने परिवार को शेरपुर में सुरक्षित रखा था, पश्चात प्रताप पर चढ़ायी की थी। राणा तब ढोलाना की ओर प्रस्थान कर गए थे और ऐसे में मुगल सेना का ध्यान बँटाने हेतु कुंवर अमर सिंह ने शेरपुर पर आक्रमण कर दिया और मिर्जा के परिवार को बन्दी बना लिया। इस बात का जब राणा को पता लगा तो तुरन्त आदेश दिया कि कुँवर अमर सिंह मिर्जा के परिवार को सम्मानपूर्वक मिर्जा के निवास पर पहुँचा दें। आज्ञानुसार कुंवर अमरसिंह मिर्जा के परिवार को ससम्मान मिर्जा के घर छोड़कर आए थे।

महाराणा प्रताप का महत्व किसी जाति, वर्ग, धर्म (सम्प्रदाय) में नहीं समेटा जा सकता वह राष्ट्र हेतु स्वतन्त्रता के लिए, समाज की उन्नति के लिए, राष्ट्र की मर्यादा हेतु प्रेरणा थे। मानवता व शौर्य की मिसाल थे।

प्रताप ने मुगलों से युद्धों में जर्जर हो गई मेवाड़ की अस्त–व्यस्त स्थिति को सुधारा। भवनों का निर्माण किया, पड़ोसी राज्यों से कूटनीतिक सम्बन्ध बनाए रखने को कहा। राजनैतिक अवहेलना करने वालों को उचित दण्ड देकर कुशलता का प्रमाण और एक आदर्श शासक होने का परिचय दिया।

माघ सुदी 11 विक्रम सम्वत 1654 (तदनुसार 29 जनवरी 1557) को उस स्वाभिमानी, देशप्रेमी, तेजस्वी, यशस्वी, स्वतन्त्रता के उपासक, सूर्य के समान प्रकाशित महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गयी। एक युग का सूर्य अस्त हो गया।

अनेक महान लोगों ने प्रताप के चरित्र, आत्मबल, देश प्रेम व स्वाभिमान की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

सरकार से अनुरोध है कि हमारे देश के लिए बलिदान देने वालों का जीवन चरित्र विद्यालयों में पढ़ाना चाहिए। आज कान्वैण्ट स्कूलों में काल्पनिक मनगढ़न्त कहानियाँ पढ़ायी जाती हैं परी लोक भूत–प्रेत के किस्से सुनाए जाते हैं। उनसे बालकों में अज्ञानता बढ़ती है अतः ऐतिहासिक सत्य घटनाओं का बालकों के कोमल हृदय पर प्रभाव पड़कर देश के प्रति प्रेम व जागरूकता, समाज के प्रति अच्छे विचार उत्पन्न होंगे ऐतिहासिक स्थानों को रमणीक बना वहाँ देशभक्त वीर नर व नारियों की वीर गाथा का ध्वनि व चित्रांकन किया जाए। हमारा इतिहास हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

गली नं. 2, चन्द्रलोक कालोनी
खुर्जा–203131
मो. 8979794715

मन्त्र-ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयं - एक शास्त्रार्थ

● डॉ. महावीर मीमांसक

19, 20, 21 जनवरी 2018 को जोधपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास, जोधपुर द्वारा जयनारायण न्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'ऋग्वेदीय वेद-संगोष्ठी' का आयोजन किया गया। संयोगवश मुझे भी गोष्ठी में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर लिया गया। संगोष्ठी का विषय था **"ऋग्वेदीय इन्द्रदेवताक सूक्तमीमांसा"**। मैंने अपने शोधपत्र वाचन में इन्द्र देवता के सभी स्वरूपों का वैदिक प्रमाणों का विस्तृत उद्धरण देते हुए प्रो.डी.एन.झा. दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा सन् 2001 में अंग्रेजी की हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखे उनके लेख "Paradox of Indian cows" की खूब धज्जियाँ उड़ाईं जिनमें उन्होंने लिखा था कि इन्द्र देवता गौ, बैल आदि का मांस खाता था। श्रोताओं ने मेरे लेख की खूब तालियाँ बजाकर प्रशंसा की और लेख वाचन की समाप्ति के पश्चात् मुझे सभी श्रोताओं ने अपने प्रशंसा पूर्ण वचनों से मुझे कृतार्थ कर दिया। खैर!

अगले अर्थात् अन्तिम दिन 21 जनवरी 2018 को आचार्या विदुषी नन्दिता जी ने **"मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्"** विषय पर अपना शोधपत्र पढ़ा। गोष्ठी क्योंकि जोधपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित की गई थी अतः भारत भर के सभी वर्गों के विद्वान् आए हुए थे, पौराणिक पद्धति के विद्वान् विशेष रूप से उपस्थित थे, जिनमें दिल्ली से लाल बहादुर संस्कृत के डॉ. प्रो. महानन्द झा और जम्मूकश्मीर से प्रो. हरिनारायण तिवारी तथा द्वारका (गुजरात) से प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी विशेष उल्लेखनीय हैं। समग्र गोष्ठी के अध्यक्ष आचार्य सत्यानन्द वेद वागीश और विशिष्ट सान्निध्य डॉ. वेदपाल (मेरठ) थे। अन्य भी अनेक मूर्धन्य विद्वान् थे।

आदरणीया विदुषी आचार्या नन्दिता जी ने अपने विषय को सप्रमाण विस्तार से प्रतिपादित करते हुए सिद्ध किया कि ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं। और अन्त में उठते हुए बड़े धीमे स्वर में यह तर्क देकर अपना वक्तव्य समाप्त कर के चली गई कि ब्राह्मणग्रन्थ ईश्वरकृत न होने से वेद नहीं हो सकते। आचार्या नन्दिता जी के इस तर्क को पौराणिक पण्डित प्रो. महानन्द झा और प्रो. हरिनारायण तिवारी ने न्याय-दर्शन की पञ्चावयवी प्रक्रिया के आधार पर सिद्ध करने के लिए चैलेन्ज कर दिया। प्रो. हरिनारायण तिवारी ने तो यहाँ तक कह दिया कि ये तीन जन्म में भी इसे सिद्ध नहीं कर सकतीं जिस पर प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी ने अपने पक्ष को अजेय होने के हर्ष में खूब ताली बजाई। वैदिक आर्य विद्वान् सब चुपचाप देखते और सुनते रहे।

खैर! पटल (मंच) पर दृश्य बदला और आर्य विद्वानों के बोलने की बारी आई। सर्वप्रथम लेखक (डॉ. महावीर मीमांसक) ने ही मोर्चा सम्भाला और पौराणिक विद्वानों के चैलेन्ज को स्वीकार करते हुए सिंह नाद करते हुए ललकारा। पहले तो लेखक वक्ता ने वैदिक और शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत किए कि ब्राह्मणग्रंथ वेद नहीं हैं। उदाहरणार्थ कुछ निम्न प्रमाण प्रस्तुत किए:-

1. **"मंत्रब्राह्मण्योनामधेयम्"** यह कात्यायन का वचन है किसी वैदिक वाङ्मय का वचन नहीं है। कात्यायन ने अपनी कर्मकाण्डीय प्रक्रिया में ब्राह्मणग्रंथों का उपयोग करने के लिए यह वचन बनाया था। अतः यह कोई प्रामाणिक वचन नहीं है, अपनी प्रक्रिया को चलाने के लिये यह कात्यायनीय तकनीकी वचन है।

2. वैदिक कर्मकाण्ड का प्रामाणिक वैदिक दर्शन जैमिनि ऋषि का पूर्व मीमांसा दर्शन है जिसमें वेद (मन्त्र) और ब्राह्मण की पृथक्-पृथक् स्पष्ट परिभाषा दे रखी है। (क) मंत्र 'वेद' की परिभाषा है **"तच्चोदकेषु मन्त्राख्या"** (पू.मी. 2.1.32) अर्थात् मन्त्र (वेद) वह कहलाते हैं जो किसी कर्म का विधान करते हैं। और

(ख) ब्राह्मण की परिभाषा है **"शेषे ब्राह्मणशब्द"** (पू.मी. 2.1..33) अर्थात् मन्त्रों (वेद) के अतिरिक्त जो भाग है वह ब्राह्मण ग्रन्थ कहलाते हैं।

यदि मन्त्र (वेद) और ब्राह्मण एक ही होते तो जैमिनिऋषि को अपने पूर्व मीमांसादर्शन में इन की अलग-अलग एक दूसरे से सर्वथा भिन्न परिभाषा देने की आवयश्कता नहीं थी।

मन्त्र ही वेद है इस का प्रमाण आचार्य यास्क ने अपने निरुक्तशास्त्र में देते हुए लिखा **"साक्षात्कृतधर्मा ऋषयो बभूवुः तेऽन्येभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मेभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः"**। यहाँ मन्त्रों (वेदों) का उपदेश साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने उत्तरवर्ती विद्वानों को दिया, यह स्पष्ट लिखा है। अतः मन्त्र (वेद) और ब्राह्मण ग्रन्थ सर्वथा भिन्न-भिन्न हैं, ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं।

3. ब्राह्मणग्रन्थ वेदों के व्याख्यानग्रन्थ हैं वेद नहीं हैं। चारों वेदों के चार ब्राह्मण ग्रन्थ अलग-अलग हैं। ऋग्वेद का ब्राह्मण ऐतरेय है। यजुर्वेद का ब्राह्मण शतपथ है। अथर्ववेद का ब्राह्मण गोपथ है और सामवेद का ब्राह्मण ताण्डय है।

इन चारों ब्राह्मणों में प्रत्येक वेद के मन्त्र के प्रतीक को समक्ष रखकर उस मन्त्र की व्याख्या की गई है, स्वतन्त्र मन्त्र कोई नहीं है। कोई भी पौराणिक पण्डित दिखला दे कि इन ब्राह्मण ग्रन्थों में अपने-अपने वेद मन्त्रों के प्रतीक लेकर उन की व्याख्या करने के अतिरिक्त स्वतन्त्र मन्त्र हैं? अतः ब्राह्मण वेद मन्त्रों के व्याख्या ग्रन्थ हैं, स्वतन्त्र वेद नहीं हैं।

4. पाणिनी की अष्टाध्यायी का सूत्र **"छन्दो-ब्राह्मणानि च तद् विषयाणि"** भी छन्द अर्थात् वेद को ब्राह्मणग्रन्थों से भिन्न मानता है। यदि वेद (छन्दः) और ब्राह्मण एक ही होते तो पाणिनी दोनों को सूत्र में 'च' कहकर अलग न दिखाते। अनेक शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध करने के पश्चात् कि ब्राह्मण वेद नहीं हैं अपितु वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ है; अब पौराणिक पण्डितों के इस चैलेन्ज का उत्तर देने की बारी थी कि न्यायदर्शन की पंचावयवी प्रक्रिया के अनुसार न्याय दर्शन की भाषा में ही यह सिद्ध किया जाए कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं।

पौराणिक पण्डितों के इस चैलेन्ज को क्योंकि हमने ही (लेखक ने) सिंह गर्जना करते हुए ललकार कर स्वीकार किया था अतः अब उसका उत्तर देने की बारी थी। श्रोता लोग भी इसी प्रतीक्षा में थे कि न्यायदर्शन की भाषा में वक्ता (लेखक) इस का कैसे क्या उत्तर देते हैं?

हमने इसका उत्तर जो 'न्यायदर्शन' की भाषा में दिया, पाठकों की जानकारी के लिए उसे प्रस्तुत करता हूँ।

न्यायदर्शन की 'पंचावयवीप्रक्रियाः' में निर्णयार्थक प्रयुक्त पंचावयव निम्न हैं-

'प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणोपनयनिगमान्यवयवाः।।' न्याय 1.1.32।।

1. प्रतिज्ञा- ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं।

2. हेतु- मनुष्यकृत होने के कारण। वेद ईश्वरकृत हैं मनुष्यकृत नहीं है, क्योंकि वेद मनुष्यकृत न होकर ईश्वरकृत होने के कारण वेद हैं। जो ग्रन्थ अनीश्वरकृत (मनुष्यकृत) हैं वे वेद नहीं हैं।

3. उद्धरण-यथा कालिदास आदि मनुष्यकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि। अथवा यथा तुलसीदास कृत रामचरितमानस, मनुष्यकृत होने से वेद नहीं है।

4. उपनय- इसी प्रकार शतपथब्राह्मण याज्ञवल्क्य (मनुष्य) कृत है, ऐतरेय-ब्राह्मण महीदास (मनुष्य) कृत है। वैसे ही अन्य ब्राह्मणग्रन्थ भी मनुष्य कृत है, ईश्वर नहीं है।

5.- निगमन- इसलिए ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं है।

इस प्रकार न्यायदर्शन की पञ्चावयवी प्रक्रिया से न्यायदर्शन की भाषा से यह सिद्ध है कि ब्राह्मण गन्थ वेद नहीं है।

लेखक के इतना कहते ही पौराणिक पण्डितों के ऊपर सौ घड़े पानी पड़ गया। मेरे बाद डा. वेदपाल जी बोले उन्होंने भी अपने तरीके से सिद्ध किया कि ब्राह्मण गन्थ वेद नहीं है।

अन्त में पं. हरिनारायण तिवारी जी अपनी प्रतिज्ञा से पलट गए और (कुछ दबी आवाज़ में कह दिया कि हम वेदों को ईश्वरकृत नहीं मानते। यह इसलिए ऐसा कहा कवि वेदों को ईश्वरकृत मानने से वे पराजित हो रहे थे।

इस पर मैं अपने पास में बैठे डॉ. वेदपाल (मेरठ) से कहा कि ये तो अब बुरी तरह फँस गए। यह तो प्रतिज्ञा हानि है और प्रतिज्ञा हानि न्याय दर्शन की भाषा (न्याय 5.2.1) में प्रथम निग्रह स्थान माना है जो प्रतिवादी की पराजय की स्पष्ट स्वीकृति और घोषणा है। आप इसकी घोषणा कीजिए। किन्तु न तो डॉ वेद पाल ने, और न ही गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. सत्यानन्द जी वेद वागीश ने मञ्च से यह घोषणा की और क्योंकि मञ्च का सञ्चालन वही कर रहे थे। इन्होंने मुझसे भी नहीं कहा कि आप यह घोषणा कर दीजिए। अन्यथा मैं तो इन्हें ऐसा अटकता कि......। नैयायिक होने से महानन्द झा तो मुख पर ताला लगा लेते क्योंकि न्यायदर्शन तो वेद को ईश्वरकृत (ईश्वरीय) ज्ञान मानता है और प्रतिज्ञाहानि को निग्रह स्थान। पं. तिवारी जी इस प्रकार पौराणिक जगत् में तिरस्कृत हो जाते। किन्तु घोषणा न होने पर भी श्रोता समझ ही गए और पौराणिक पण्डित भी कि वे बुरी तरह पराजित होकर मुँह की खा चुके हैं।

अन्त में ये सब पौराणिक पंडित मेरे पास आए और भरी सभा में चरणस्पर्श कर मुझे गुरु माना। मैंने कहा गुरु तो महर्षि दयानन्द को मानिए जिनके कारण मैं आज आपके समक्ष इस स्थिति में हूँ। आर्यसमाज में शास्त्रार्थ परम्परा समाप्त होने से वैदुष्य नहीं रहा। मुझे अपनी छात्रावस्था से ही शास्त्रार्थ करने और उसका महत्व का पता है। क्योंकि मैंने अनेक शास्त्रार्थ किए हैं और प्रतिद्वन्द्वियों को हराया है।

वैदिक शोध सदन
A-3/11 पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063
मो. 9811960640

कलम योगी व कर्मयोगी: महात्मा आनंद स्वामी जी सरस्वती

● प्रो. डॉ. किरण बाला

भारतीय साहित्येतिहास में स्वर्ण युग के नाम से विभूषित भक्तिकाल में प्रारंभ भक्ति आंदोलन के उतरार्द्ध में आर्य समाज की स्थापना व अतिशीघ्र ही इसकी प्रतिष्ठा नवजागरण की पूर्व सूचक थी। भारतीय जनमानस जो सदियों से धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्तर पर रूढ़िग्रस्त व कुंठाग्रस्त था,उसमें नवजागरण की चेतना भरने का श्रेय आर्य समाज को भी दिया जाता है। आर्य समाज के प्रचार–प्रसार करने वालों में महात्मा आनंद स्वामी सरस्वती ज़ी (पूर्व नाम श्री खुशहालचंद जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) का नाम उल्लेखनीय है। सामाजिक कुरीतियों एवं विषमताओं के उन्मूलन हेतु सदैव प्रयासरत व प्रतिज्ञाबद्ध पथ–प्रदर्शक व प्रणेता महात्मा आनंद स्वामी जी सरस्वती को पूर्ण विश्व में निःस्वार्थ कर्मयोगी व युगद्रष्टा के रूप में स्मरण किया जाता है। धर्मयोगी होने के साथ–साथ एक सार्थक कलम योगी होना भी उनके व्यक्तित्व का अन्य विलक्षण पक्ष है।

15 अक्तूबर सन्, 1882 को जब पंजाब (अब पाकिस्तान) के जलालपुर जट्टाँ गाँव में नवजात खुशहाल चंद "खुरसंद" का जन्म हुआ तब भारतीय समाज न केवल पराधीनता की रक्तांजित बेड़ियों में ही जकड़ा पड़ा था बल्कि सामाजिक व राजनैतिक स्तर पर भी भयावह कुरीतियों, पतनोन्मुख जीवन मूल्यों व विषमताओं से त्रस्त व ग्रस्त था। पिता श्री गणेश दास एवं माता श्रीमती जीवन देवी के कुशल निर्देशन व सात्विक परवरिश में प्रारंभ से ही विवेकी व धर्म परायण खुशहाल चंद जी शीघ्र ही आर्य समाज के संपर्क में आ गए और पुण्यात्मा महात्मा हंसराज जी के सहयोगी बन कर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्य में जुट गए। महात्मा आंनद स्वामी जी की पुस्तक 'पूज्य महात्मा हंसराज जी' के 'प्रारम्भिक प्राक्कथन' में पुस्तक के प्रकाशक श्री केशोराम लिखते हैं "एक महात्मा ही दूसरे महात्मा के मनोभाव समझ सकता है और संसार के सामने ला सकता है। महात्मा हंसराज जी प्रायः अपने दिल की बातें महात्मा खुशहाल चंद जी से किया करते थे। खुशहाल चंद जी को आर्य समाज की सेवा में लगाने वाले भी महात्मा हंसराज जी ही थे। इस तरह उन दोनों का निकट सम्पर्क था।" (पृ. प्रारंभ प्राक्कथन) । इस प्रकार लाहौर में महात्मा हंसराज जी के सानिध्य में व मार्गदर्शन में आप इतने प्रभावित हुए कि आपने अपना पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित करने का सकंल्प कर लिया जिस को शायर ने क्या खूब लिखा है।

उठो तो ऐसे उठो फख़र हो बुलंदी को
झुको तो ऐसे झुको बदंगी भी नाज़ करे

लाहौर में ही स्वामी जी ने 'आर्य गजट' जो कि उस समय आर्य समाज व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की प्रतिष्ठित पत्रिका थी, जसम्पादकीय विभाग का दायित्व ग्रहण किया और पत्रकारिता के अति संवेदनशील व दायित्वपूर्ण क्षेत्र में कदम रखा। 1921 में जब मालाबार के मोपला मुसलमानों ने भारतीयों से अमानवीय व क्रूरतापूर्ण व्यवहार कर उन्हें निरस्त व त्रस्त करने का प्रयास किया तो खुशहाल चंद जी आर्य युवकों के प्रतिनिधि बन कर मालाबार पहुँचे व अत्याचारियों के विरुद्ध राष्ट्रीय चेतना जगाई। जब खुशहाल चंद जी को लगा कि राष्ट्र को यदि एक सूत्र में पिरोना है तो जन–मानस को राष्ट्रीयता का सन्देश देना अनिवार्य है और यह कार्य पत्रकारिता के माध्यम से ही संभव है तो 1923 में अविभाजित पंजाब की पत्रकारिता के इस पितामह व संघर्षशील संन्यासी आनंद स्वामी जी सरस्वती ने वैशाखी के अवसर, दैनिक उर्दू "मिलाप" का प्रकाशन शुरु किया जो कालांतर में पंजाब में हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव व विकास में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। अब तो पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दू धर्म में सुधार के लिए आर्य समाज द्वारा संचालित सार्वजनिक हित के कार्यक्रमों में युवा खुशहाल चंद अस्थिर स्वास्थ्य के बावजूद बढ़–चढ़ कर भाग लेने लगे तथा मिलाप व "आर्य गजट" में निरन्तर उन कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रकाशित करने लगे। महात्मा जी की पुस्तक 'पूज्य महात्मा हंसराज' के पृष्ठ 14–15 पर स्वयं लिखते हैं कि "योरूपियन लेखकों व पादरियों ने भारत को निकृष्ट रंग में संसार के सामने रखा। इस के पीछे उनका एक विषैला उद्देश्य था कि वह सारे भारत को अकर्मण्य व निकम्मा बना देना चाहते थे ताकि भारत में निराशा फैले और यहाँ रहने वाले न केवल अपने देश से, अपनी सभ्यता संस्कृति से बल्कि अपने धर्म कर्म से अपितु अपने आप से भी घृणा करने लगे........ लेकिन आर्य समाज के आगमन से यह संभव नहीं हुआ। भारत को उठना था, वह उठा...... पश्चिम की प्रबल आँधी से इस पवित्र जोत को बचाने के लिए वहमों–भ्रमों व अज्ञान की सब बाधाओं को पार कर युग पुरुष स्वामी महर्षि दयानंद जी ने इस अधोगति का स्पष्ट कारण भारतीयों की अपने उन्नत अतीत के प्रति अश्रद्धा में झाँका व आँका। खुश्क व प्राणहीन हो रही भारतीय संस्कृति के तैलसिंचन के लिए स्वामी दयानंद जी सरस्वती ने पुण्य–पुरातन संस्कृति व ज्ञान के भण्डार वेदों की महानता सिद्ध कर नारा लगाया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं.... हमें इस और बढ़ना होगा" महात्मा आनन्द स्वामी जी ने भी इसी स्वर को बुलंद किया "लौटो वेदों की तरफ..... उन्हीं का आचरण करने से संसार सैकड़ों वर्षों से सुखी रहा है और अब फिर प्रशस्त हो सकता है।" (पृ. 17) नवचेतना से सम्बद्ध इसी अवधारणा को और सम्पुष्ट कर अपने युग को संचेतन करने हेतु महात्मा आनंद स्वामी अपनी पुस्तक 'प्यारा ऋषि' में लिखते हैं "भारतीयों के अन्दर जब तक कुरीतियाँ, कुत्सित विचार, छुआ–छूत, वैमनस्य, ऊँच–नीच का भेदभाव, अब्रह्मचर्य इत्यादि दुर्गण व दुर्व्यसन रहेंगे तब तक परतन्त्रता की बेड़ियाँ नहीं कटेंगी।" 1939 में निजाम हैदराबाद द्वारा हिन्दू उत्पीड़न के विरुद्ध सत्याग्रही जत्था लेकर आनंद स्वामी जी हैदराबाद गए और सात महीनों तक निज़ाम की कैद में रहकर संघर्ष किया व हिन्दुत्त्व को राहत दी। जब आर्य समाज की पवित्र पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रकाशन व पाठन पर प्रतिबन्ध लगा तब भी आप सिंध गए और संघर्ष किया। कालान्तर में इस कटु अनुभव पर आपकी संस्मरण पुस्तक भी प्रकाशित हुई 'जेल की कहानी'।

1947 में भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् आप ने 'स्वामी आत्मानन्द जी' से यमुनानगर जगाधरी में संन्यास दीक्षा लेकर आत्म चिंतन व आत्मदर्शन के लिए देहरादून से तीन मील के अन्तर पर 'नाला–पानी' के घने जंगल 'तपोवन' में छः माह तक निरन्तर साधनारत रहकर पण्डित श्री रामावतार जी वेदतीर्थ से योगदर्शन का विशद ज्ञान प्राप्त किया तथा ऋषिकेश में स्वामी ब्रह्मचारी चैतन्य स्वरूप जी के चरणों में बैठकर 'सांख्यकारिका' का अध्ययन किया। सागर तल से दस हजार फुट की ऊँचाई पर गंगोत्री में योगनिष्णात योगीराज ब्रह्मचारी स्वामी वेद व्यास देव जी की पवित्र वाणी से सांख्य दर्शन की शिक्षा प्राप्त की। अब खुशहाल चंद से महात्मा आनंद स्वामी जी सरस्वती की संज्ञा से विषूभित हो चुके आप ने यथासंभव यथासामर्थ्य वैश्विकस्तर पर कीनिया, युगांडा, तंजानिया इत्यादि स्थानों का भ्रमण किया और उपदेश दिए कि आत्मचिंतन व प्रभुदर्शन के अभाव में मोक्ष असंभव है। आप की पुस्तक 'त्यागमय देवियाँ': पार्वती के उद्बोधन में आप कहते हैं "प्रभु भजन अथवा योग सीखने के लिए अनिवार्य नहीं कि सिर में भस्म डाल कर घर को त्याग दिए जाए। यह त्याग तो स्थूल त्याग है वास्तविक त्याग तो है कि सांसारिक क्षेत्र में रहत हुआ सहृदय (व्यक्ति) मन से त्यागी बन प्रभु जन में रुचि बढ़ाए व योग मार्ग पर अग्रसर हो।" आनंद गायत्री कथा' में पूर्ण विश्व को गायत्री मंत्र की अनूठी शक्ति से परिचित करवा कर विस्मित किया। आपकी निम्न पुस्तकें प्रकाशित व उपलब्ध हैं–

1. प्रभुभक्ति, 2. प्रभु दर्शन, 3. आनंद गायत्री कथा, 4. उपनिषदों का सन्देश, 5. सुखी गृहस्थ, 6. सत्यनारायण व्रतकथा, 7. दो रास्ते, 8. भक्त और भगवान, 9. मानव व मानवता, 10. बोध कथाएँ, 11. प्रभु मिलन की राह, 12. घोर घने जंगल में, 13. आनंद भागवत कथा, 14. माँ, 15. त्यागमय देवियाँ, 16. तत्वज्ञान, 17. अमृतपान, 18. प्यारा ऋषि, 19. शंकर और दयानंद, 20. यम नियम विवेचन, 21. एक ही रास्ता, 22. मानव जीवन गाथा, 23. दुनियाँ में रहना किस तरह, 24. पार्वती, 25. जेल की कहानी

आनंद स्वामी जी की पुस्तकों में अत्यन्त सहज व सरल वर्णन व व्याख्यान प्राप्त होते हैं। ये आख्यान आत्मा व परमात्मा के बीच के भ्रम के मायाजाल को इतनी सरल, सहज व ग्रहणयोग्य भाषा में समझा देते है कि केवल ज्ञानी या विद्वज्जन ही नहीं सामान्य पाठक भी भावविभोर हो जाता है और सहज ही आत्मदर्शन व प्रभु मिलन के पथ पर अग्रसर हो उठते हैं।

दिव्यज्योति व ज्ञान चेतना के यह पुंज 24 अक्टूबर 1977 को दिल्ली में ब्रह्मलीन हुए। यहाँ विशेष रूप से यह उल्लेखनीय है कि आनंद स्वामी जी ने ज्ञान, चेतना व सुधार का जो परचम अपनी ओजस्वी वाणी व प्रभावी लेखनी के रूप में फहराया तथा आर्य समाज, वैदिक प्रचार–प्रसार को और वैदिक संस्कृति के सम्मान को जो नई प्रतिष्ठा दी। आज उन्हीं के यशस्वी पौत्र आर्य रत्न पूनमसूरी जी, उस प्रतिष्ठा को और भी सशक्त और सुदृढ़ बनाने में पूर्ण तत्परता से प्रयासरत हैं। आज संम्पूर्ण डी.ए.वी. जगत तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी विश्वकल्याण हेतु शैक्षणिक, सांस्कृतिक स्तर पर तथा आध्यात्मिक स्तर पर विविध योजनाओं/परियोजनाओं को लेकर सुनिश्चित व सुचारु कार्य कर रहे हैं। महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती ने अपनी तपोमयी साधना से अपने आत्मसाक्षात्कार से, आत्मचिंतन से तथा राष्ट्रवादिता से सम्पुष्ट जिस आदर्श की अवधारणा विश्व के उनके पौत्र पद्म श्री पूनम सूरी अपने पितामह की प्रेरणा व ईश्वर की कृपा से उसे निरन्तर सार्थक करें ऐसी हमारी ईशचरणों में प्रार्थना है और वन्दना भी।

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
डी.ए.वी. कालेज, अमृतसर।

कज्जल दर्पण – उज्ज्वल दृश्य

● देवनारायण भारद्वाज

ब्रज के एक दार्शनिक सन्त बहुत प्रसिद्ध थे। बड़े–बड़े राजे–महाराजे–श्रेष्ठीगण उनके दर्शन व आशीष वचन के लिए चक्कर लगाते रहते थे। अभी वे स्नानादि से निवृत्त होकर अपने उपासना के आसन पर बैठने ही जा रहे थे कि उन्होंने अपनी बेटी को आवाज़ लगाई– बेटी! मेरा दर्पण लेकर आओ। सन्त एक विशेष आकृति बनाकर चन्दन का तिलक अपने मस्तक पर लगाते थे। बेटी जो दर्पण लेकर आई– वह पानी से भरा हुआ एक कठौता था। कठौता लकड़ी का बना एक तसला समझ लीजिए। सन्त जी ने पानी के स्थिर होने पर अपने माथे पर तिलक लगाना आरम्भ किया ही था, कि एक राजा उनके दर्शनों के लिए उपस्थित हो गए। उस दिन तो संक्षिप्त दर्शन के बाद राजा जी लौट गए, दूसरे दिन वे फिर आए और उनको सोने–चाँदी की आरसी भेंट की। सन्त जी ने उनकी आरसी को वापस करते हुए– निर्लोभी शब्दों में कह दिया– मैं अपनी कुटिया में व्यर्थ वस्तुओं का भण्डार बनाना पसन्द नहीं करता, और कृपया आप भी यहाँ से हट जाइए– मेरी धूप रुक रही है।

एक कोई दूसरे दार्शनिक सन्त थे, उन्होंने आरसी नही एक बड़े दर्पण की भेंट को स्वीकार कर आश्रम की प्रमुख दीवाल पर टाँग दिया था। वे सन्त तो महान थे, प्रतिष्ठित थे और नित्य उपासना से पूर्व दर्पण में स्वयं को देखा करते थे। लेकिन थे बहुत ही कुरूप। उनके दर्पण में मुख देखते समय एक शिष्य ने पूछ लिया– गुरुजी! क्या आप इतने सुन्दर हैं जो दर्पण में स्वयं को झाँका करते हैं? उन्होंने उत्तर दिया मैं निःसन्देह कुरूप हूँ– इसलिए मैं दर्पण में झाँक कर अपनी कुरुपता का भान करते हुए– अपने मन–वचन–कर्म से ऐसा व्यवहार करता हूँ, जिससे मेरी कुरूपता ढक जाए और आचरण की सुन्दरता छा जाए। शिष्य ने फिर पूछा– "तो फिर जो लोग सुन्दर हैं– उन्हें दर्पण देखने की आवश्यकता नहीं है क्या?" गुरु जी ने उत्तर दिया– "उन्हें तो दर्पण देखने की और भी अधिक आवश्यकता है, जिससे अपनी सुन्दरता को बनाए रखने के लिए, उसमें चार चाँद लगाने के लिए सुन्दर कार्य–व्यवहार करते रहें, और कोई निन्दनीय कार्य न करें, जिससे उनकी सुन्दरता में ह्रास नहीं विकास होता रहे। कोई भी क्यों न हो, जो उपनिषद्–कथाओं को सुन लेते हैं, उनके जीवन में (उप+नि+षद्) **"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतंगमयेति"** का शतपथ प्रस्तुत हो जाता है।

बादशाह औरंगज़ेब की पुत्री जेबुन्निशा ने अपने चाचा दाराशिकोह से उपनिषद् की कथाओं को सुनकर "दर्पण" के अर्थ को समझ लिया था– (दर्प+न) किसी भी प्रकार के दर्प–अहंकार को न करना। तभी तो भेंट में मिले चीनी आइने या दर्पण के यकायक दासी के हाथी टूट जाने पर उसके डर को, प्रताड़ना को उसकी हताशा के वाक्य के साथ अपनी सुभाषा के वाक्य को जोड़कर भयमुक्त कर दिया था।

अज कजा आइनाये चीनी शिकस्त।
खूब शुद सामाने खुद बीनी शिकस्त।

कोई कितना ही करे, दर्पण आज की अपरिहार्य वस्तु बन गया है, जो मोबाइल से बढ़ते–बढ़ते 'सेल्फी' का स्वयं चित्रण' बन गया है। इसी दशा–दुर्दशा के सचित्र समाचार सर्वत्र दिखाई सुनाई देते हैं, जो स्वमित्रा तो कम स्वहन्ता के रूप में अधिक प्रदर्शित होते हैं। लेखक के पास भी एक ऐसा दर्पण रहा है, जो अपनी स्वर्णजयन्ती मनाते हुए विदा लेने की स्थित में आ गया है। उसे मैं कज्जल दर्पण कहता रहा हूँ, जो मुझे सदैव उज्जवल दृश्य दिखाता रहा है। कालेज के प्रवक्ता पद को छोड़कर 1960 में जब राजकीय सेवा में योगदान किया था, तब चतुर्थ श्रेणी से लेकर प्रथम श्रेणी तक कर्मचारियों–अधिकारियों के वेतन कम होते थे, किन्तु चरित्र के बल पर निर्वाह अच्छी तरह से हो जाता था। प्रारम्भिक स्तर पर मैं मुख्यालय लखनऊ में नियुक्त था। खादी वस्त्रों के प्रचार के लिए सभी को गाँधी आश्रम से हुण्डियाँ दी गईं थी, जिनके मूल्य के बराबर वे खादी के वस्त्र क्रय कर सकते थे, और मूल्य किश्तों के अनुसार–कईं महीनों में चुका सकते थे। मैं अपनी हुण्डी लेकर गाँधी आश्रम हजरतगंज में पहुँचा, तो उस मूल्य में मुझे अपनी पसन्द का कोई कपड़ा नहीं मिला। अन्ततः विक्रय सहायक की पसन्द से ही मूल्यभर का वस्त्र क्रय कर लिया। वह वस्त्र एक दम गहरे काले रंग का ऊनी वस्त्र क्या, भेड़–बकरी के बालों से बना अत्यन्त खुरदरा था। अब लखनऊ से प्रोन्नति पर मैं मेरठ आ गया।

मेरठ में वस्त्र शिल्पियों को मन पसन्द कुर्ता बनाने के लिए दिया। कई दिन रखकर उन्होंने वापस कर दिया। बोले जो आप चाहते हो वह मैं नहीं बना सकता। विवाह हुए कुछ ही माह हुए थे। श्रीमती जी से आग्रह किया, उन्होंने उस वस्त्र में मेरी अभिलाषा भी पूरी कर दी, और कनिष्ठ अनुज के लिए एक सदरी भी बना दी। उस वस्त्र का स्वरूप ऐसा बन पड़ा था कि उसे कोट–कुर्ता–कमीज किसी रूप में पहन सकते थे। खुरदरा वह था ही, दिगम्बर रहने वाले सन्त जन भी जब उसे देखते थे, तो कह उठते थे– कि यदि मैं कभी वस्त्र धारण करूँगा, तो शीत ऋतु में ऐसा ही कठोर–कण्टक पूर्ण कज्जल वस्त्र ही बनवाएगा। उसका काला रंग मुझे उसी प्रकार भूले–बिसरे चित्र दिखाता रहता था, जिस प्रकार किसी सिनेमाघर के अंधेरे हाल में पर्दे पर उज्ज्वल दृश्य दिखाई देते हैं। जैस–जैसे मेरे साथ–साथ उस वस्त्र की आयु बढ़ती जाती रही है, वैसे–वैसे पुरातन दृश्य और अधिक उज्ज्वल होते जाते रहे हैं। उसके निरन्तर फटते जाने पर भी मैंने उसका साथ नहीं छोड़ा। जिस वस्त्र को कभी हम लवादा, कभी कवच के नाम से बुलाते थे, धीरे–धीरे वह विदीर्ण होने लगा। बाहें फटी तो बन्डी, बन्डी फटी तो ऊपर जाकेट, वह भी फटी तो शाल–पट्टिका, और इसके फटने पर भी सन्ध्योपसना के आसन के रूप में हमारा साथ देता रहा है। इस ऊनी वस्त्र की पवित्रता की पात्रता चिर स्मृति की प्रेरणा–प्रसादी की उभरती हुई दृश्यावली चलचित्रों से अधिक चमकदार है। आज के युग में वे दृश्य जीवन–व्यवहार में दुर्लभ हैं। वे इस कज्जल दर्पण से स्पष्ट स्मरण पटल पर उभर आते हैं। वे देखिए अमौसी हवाई अड्डे पर पुत्री इन्दिरा गांधी के साथ प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु उतर रहे हैं। पूरा महानगर उनके स्वागत में उमड़ पड़ा है। उनके साथ सुरक्षा गार्डों का कोई भी दल नहीं है। खुली जीप में हाथ हिलाकर स्वागत करते चलते हैं। फूल मालाओं को हँसते हुए बच्चों की ओर फेंक देते हैं। विशाल सभाओं में मंच पर उनके साथ लोकप्रिय नेतागण होते थे, सुरक्षा गार्डों की भीड़ नहीं। लखनऊ विश्वविद्यालय में भाषण देकर निकलते समय खुली जीप में युवा छात्र उनको स्पर्श करके देखना चाहते थे। नेहरुजी जीप पर युवा छात्र उनको स्पर्श करके देखना चाहते थे। नेहरुजी जीप पर इधर से उधर अथवा उधर से इधर होते रहते थे, और भीड़ में जीप चींटी की भाँति रेंगती हुई आगे बढ़ती थी। एक नेहरु जी क्या मान्य मोरारजी देसाई, मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचेता कृपलानी सभी बिना सुरक्षा गार्डों के घेरे से बाहर रहते थे। हजरतगंज में मन्त्रीगण, विधायक स्वतन्त्र रूप से टहलते मिल जाते थे। यहाँ के राज्य सूचना केन्द्र पर निरन्तर रवीन्द्र संगीत की ध्वनि गुञ्जरित होती थी, तथा उच्च स्तरीय नेतृत्व अगल–बगल बैठकर चर्चा में व्यस्त रहता था।

सिटी बस, टैक्सी, टैम्पो तो चलते थे, किन्तु सर्वाधिक संख्या इक्का व तांगों की रहती थी। तांगा चालक स्वयं को नवाबों का वंशज बताकर चार आने–आठ आने (चौथाई या आधा रुपया) की पेंशन पर गर्व करते थे। एक वंशज तो ऐसे थे, जो नित्य संध्या को शानदार रंग बिरंगे वस्त्र व टोपी धारणकर ऊपर से रंगीन छतरी तानकर हजरतगंज में भ्रमण करने आते थे। जलपान गृह एवं भोजनालयों के बाहर आज की भाँति टेढ़ी निगाह से देखने वाले सुरक्षा गार्ड नहीं होते थे। प्रत्युत सजी–धजी वेशभूषा में कोई कर्मचारी रहता था, जो प्रवेश करने वाले व्यक्ति को सैल्यूट से स्वागत करता था। भीतर जाकर चार आने (पच्चीस पैसे) का दोसा खाने वालों को भी यह सैल्यूट–स्वागत मिल जाता था। लालबत्ती चौराहे के बड़े काफी हाउस में सायंकाल को प्रसिद्ध साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी आदि सभी के सहज ही दर्शन सुलभ हो जाते थे। उन्हीं दिनों रूसदेश के प्रथम अन्तरिक्ष यात्रा यूरी गागरिन को भारत आमन्त्रित किया गया था। कुछ भारतीय अधिकारियों के साथ वे खुली जीप में बैठकर अधिकतर खड़े होकर लोगों का हँसते–मुस्कराते हुए अभिनन्दन स्वीकार कर रहे थे।

यह देखिए हजरतगंज के लालबत्ती वाले बड़े चौराहे के समीप बापू जी की प्रतिमा है, स्टेडियम के समीप बेगम हजरत महल पार्क है, अमीनाबाद का हनुमान मन्दिर का पार्क, या अमीनाबाद पार्क है। यहाँ बिना किसी गार्ड के डॉ. राम मनोहर लोहिया, आचार्य जे. वी. कृपलानी आदि की सभाएँ बिना रोकटोक चलती रहती थीं। अमीनाबाद में ही एक बड़ा पुस्तक बाज़ार था, जिसमें दुकानों की भरमार थी। आकर्षण का केन्द्र पार्श्व में स्थित पुरानी पुस्तकों की बड़ी–बड़ी दुकाने थीं। जब मैं लखनऊ से विदा होने लगा, तो उन पुरानी पुस्तक–दुकानों का भ्रमण किया। एक हिन्दी शब्दकोश मात्र बारह रुपए में क्रय करके लाया, जिसने मेरा बहुत साथ दिया। उनको, जिन्होंने उसे उस दुकान पर पहुँचाया– मैं सम्मानपूर्वक स्मरण करता हूँ, क्योंकि उन्हीं की कृपा से मैं अपने शब्द ज्ञान में वृद्धि कर सका।

हमारा यह कपड़े का कज्जल दर्पण चित्र पटल की भाँति न जाने कितने चलचित्रों को समेटे हैं, उसका दृश्य–दर्शन सदैव चलता ही रहेगा। लखनऊ के राज्य स्तरीय अनुभाग में मुझे क्लब मन्त्री बनाया गया। आने वाली पत्र–पत्रिकाएँ कार्यालय के लोग तो कम पढ़ते थे, किन्तु न्यू हैदराबाद के स्वच्छ–शुद्ध प्रभाग में मैं रहता था, वह मिश्रा–शुक्लाओं की बस्ती थी, जो क्लब कार्यालय में नहीं लग पाता था, वह हमारे छोटे से आवास के शान्त सुरक्षित द्वार पर चलता था। युवा और सेवा निवृत्त जन साथ–साथ बैठकर हास्य–विनोद पूर्ण ज्ञानवर्धन करते थे और मेरा मार्गदर्शन भी होता रहता था। मेरी नई–नवेली दुल्हन के वहाँ पहुँचने पर शुक्ला जी एवं उनकी धर्मपत्नी, जिन्हें हम दद्दा जी एवं दिद्दी जी कहते थे, ने हम लोगों को अपने पास ही बुला लिया था। उनके अपार प्रेमाधार का मैं भूरिशः आभार व्यक्त करता हूँ।

इस वस्त्र रूपी कज्जल दर्पण का एक एक रेशा अब मुझसे विदा होने वाला है, किन्तु उसका उज्ज्वल दृश्य आजीवन मुझसे पृथक् नहीं हो सकता है। यह मेरा कोई तथ्यहीन काल्पनिक कथन नहीं है, प्रत्युत् यह वैदिक विवाह दर्शन का सार है। वैवाहिक यज्ञ शृंखला प्रारंभ करने से पूर्व मण्डप में ही वर पक्ष की ओर से कन्या व वर दोनों को ही, गृह की देवियों द्वारा तैयार किए हुए चुनरी एवं दुपट्टा ओढ़ाए जाते हैं। इन सूक्ष्म वस्त्रों को बुनने या तैयार करते समय गृह देवियों की भावनायें भी गुँथती

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

आर्यो! वैदिक धर्म का पालन करो

● पं. नन्दलाल निर्भय

जिस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती संसार में आए थे उस समय संसार की भारी दुर्दशा थी। नर–नारी, धर्म–कर्म, वेद पठन–पाठन, संध्या–हवन, पुण्य–दान, जप–तप भूल चुके थे। यज्ञों में नर बलि, पशु बलि, पक्षी बलि दी जाती थी। स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। बाल विवाह, अनमेल विवाह होते थे और कहीं सदाचार, ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं दी जाती थी। उस समय लाखों बाल विधवाएँ रोती थीं जिनमें से हज़ारों विधर्मी, ईसाई, मुसलमानों के घरों में बस रही थीं अर्थात् सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ था।

नर–नारी कर्म प्रधानता का वैदिक सिद्धान्त त्याग कर जन्म–जाति को बढ़ावा दे रहे थे। वेदों के स्थान पर पुराणों की कथा होती थी। सेवा करने वाले गरीब कमजोर व्यक्तियों को नीच समझकर ठुकराया जाता था। इसी का परिणाम था रोजाना राम, कृष्ण के हजारों वंशज ईसाई, मुसलमान बन रहे थे। उस समय विदेश यात्रा को महापाप समझा जाता था। विधर्मी लोग हमें असभ्य–जंगली, महामूर्ख बताते थे। ईसाई पादरी वेदों को गडरियों के गीत बताते थे। भारतीयों में पाखण्डी लोगों ने यह धारणा बैठा दी थी कि वेदों को शंखासुर नाम का राक्षस पाताल लेकर चला गया है। अर्थात् वेद इस संसार में नहीं हैं।

उस समय धर्म की हालत आटे के दीपक की तरह थी जिसे घर के अन्दर रख दें तो चूहे खा जाए और यदि बाहर रख दें तो कौए लेकर उड़ जाए। उस समय भंगी–चमार के छूने पर, तेली के आगे आ जाने पर धर्म नष्ट होना माना जाता था। भारत के राजा लोग अज्ञानता वश आपस में लड़ते रहते थे। विदेशी अंग्रेज शासक हमारी इस फूट का भरपूर लाभ उठा रहे थे। उस समय वैदिक सभ्यता, संस्कृति, गौ–ब्राह्मणों का कोई रक्षक नहीं था अपितु सभी भक्षक बने हुए थे। ऐसे भयानक समय में महर्षि देव दयानन्द का इस देव भूमि में प्रादुर्भाव हुआ था।

स्वामी जी ने संसार के भले के लिए अपने भरे पूरे परिवार को छोड़ा और जीवन के सभी सुखों को त्याग कर मानवता की सेवा करने का बीड़ा उठाया। महर्षि दयानन्द ने स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा ली और योग सीखा। मथुरा में वेदों के प्रकाण्ड पंडित स्वामी विरजानन्द सरस्वती के पास जाकर उनकी सेवा की और वैदिक ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा पूर्ण होने पर दक्षिणा के रूप में गुरुदेव को संसार में वेद ज्ञान का प्रचार करने का वचन दिया, जिसे जीवन भर निभाया।

स्वामी जी ने भारत में घूम–घूमकर वेद प्रचार किया और नर–नारियों को कर्म प्रधानता का महत्त्व समझाया। उन्होंने ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, अजन्मा, अनादि, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता बताया। मूर्ति पूजा को अज्ञानता का मूल बताकर मूर्ति पूजा से होने वाली हानियों का बोध कराया। उन्होंने नारी जाति और गऊ माता को पूज्य बताया तथा स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। स्वराज्य का मंत्र स्वामी जी ने सबसे पहले भारतवासियों को दिया और विदेशी राज्य महादुखदायी बताया। उन्होंने भारत के सभी राजाओं को मिलकर चलने और अपना एक नेता बनाने के लिए प्रेरित किया। सन् 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम महर्षि दयानन्द महाराज के प्रयासों का ही सुफल था।

स्वामी जी ने राव युधिष्ठिर से मिलकर सर्वप्रथम रेवाड़ी (हरियाणा) में गौशाला की स्थापना कराई। स्वामी जी यह अच्छी तरह जानते थे कि गौ जैसा उपकारी पशु संसार में कोई नहीं है इसलिए उन्होंने गोकरुणानिधि शास्त्र की रचना करके गौ सेवा को परमधर्म बताया।

स्वामी जी ने भारत के सभी मतों को मानने वाले विद्वानों को समझाया कि अगर तुम संसार का भला चाहते हो तो एक ईश्वर, एक धर्म, एक अभिवादन मानकर वेद ज्ञान का प्रचार करो। बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है उन स्वार्थी, दम्भी लोगों ने स्वामी जी की सलाह नहीं मानी। स्वार्थी पाखण्डी लोगों ने उन पर गोबर फेंका, पत्थर बरसाए और उन्हें सत्रह बार विष पान कराया। किन्तु वे अपने धर्म पथ से विचलित नहीं हुए। अगर स्वामी दयानन्द जी इस धरती पर नहीं आते तो आज कोई भी वेद शास्त्रों की चर्चा करने वाला, राम, कृष्ण आदि महापुरुषों और ऋषि–मुनियों का नाम लेने वाला दुनिया में नजर नहीं आता। वास्तव में उन जैसा त्यागी–तपस्वी, वीर, साहसी, ईश्वर विश्वासी, वेदों का विद्वान् महाभारत काल के बाद कोई दूसरा व्यक्ति इस संसार में नहीं हुआ। वे वस्तुतः सच्चे युगनायक संन्यासी थे। उनका ऋण हम कभी नहीं चुका सकते।

आर्यो! बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि महर्षि दयानन्द जी ने हमारे भले के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया था। किन्तु हम उनकी शिक्षाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं। महर्षि ने प्रत्येक व्यक्ति को पंच महायज्ञ करने की शिक्षा दी थी। किन्तु हम पंच महायज्ञों का करना–कराना भूल चुके हैं। अब तो यह स्थिति आ गई है कि आर्य समाज के भवनों में संन्यासी, विद्वानों, उपदेशकों को ठहरने भी नहीं दिया जाता। शहरों में आर्य समाज के भवनों में बारात घर बना दिए गए हैं और बनाए जा रहे हैं। बारात घरों में आए दिन बारातियों द्वारा हुड़दंग मचाने एवं शराबबाजी करने की खबरें समाचार पत्रों में छपती रहती हैं। महर्षि दयानन्द ने कर्णदास के राजा राव कर्मसिंह को रासलीला के नाम पर महापुरुषों के स्वांग भरने पर फटकार लगाई किंतु आज आर्य समाज के उत्सवों में बाल–बालिकाओं को महापुरुषों के स्वांग भरने की खुली छूट दी जाने लगी है जो शर्म की बात है। स्वामी जी ने सह शिक्षा को घातक बताया था किन्तु अब आर्य समाज के विद्यालयों में सहशिक्षा दी जाती है। आर्य समाजों के पदाधिकारी कईं स्थानों पर शराबी, मांसाहारी, बेईमान व्यक्ति बने हुए हैं जिन्हें वैदिक सिद्धान्तों का कोई ज्ञान नहीं है। आर्य समाजों और सभाओं में पदों और सम्पत्तियों के ऊपर मुकदमेंबाजी हो रही है जिससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा मिट रही है। यह हमारे लिए शर्म की बात है।

इस समय संसार में हजारों व्यक्ति वेद के विरुद्ध मत–मतांतर चलाकर, ईश्वर की पूजा छुड़वाकर गुरुडम एवं पाखण्ड फैला रहे हैं। ऐसे सैकड़ों पाखण्डी जेलों में बन्द हैं। इस समय चरित्रहीनता और भ्रष्टचार बढ़ रहे हैं जिससे सारा संसार दुखी है। अगर महर्षि दयानन्द को यह ज्ञात होता कि हम इतने स्वार्थी, प्रमादी और लोभी बन जाएँगे तो वे कदापि विषपान नहीं करते। पं. लेखराम ने कहा– ''लेखनी का कार्य और शास्त्रार्थ बंद नहीं होने चाहिए।'' स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था शुद्धि का कार्य कभी भी बंद नहीं होना चाहिए। आप ठण्डे दिल से विचार करें कि क्या हम उनकी बात मान रहे हैं? जो अपने आगे किसी को भी कुछ नहीं समझते। याद रखो यह धन यहीं पड़ा रह जाएगा। इस संसार में जो व्यक्ति निःस्वार्थ भावना से परोपकार एवं संसार की भलाई के काम करते हैं यह संसार उन्हीं की महिमा के गीत गाता है। अगर आप भी महान् बनना चाहते हैं और महर्षि दयानन्द महाराज के सच्चे शिष्य बनने का दम भरते हैं तो वेद प्रचार के लिए अच्छी तरह कमर कसकर कर्म क्षेत्र में कूद पड़ो। अन्त में:–

"आर्य कुमारो! अब तो जागो, आगे कदम बढ़ाओ तुम।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ तुम।।
देश, धर्म के काम जो आए, उसे जवानी कहते हैं।
सारा जग खुश होकर गाए, उसे कहानी कहते हैं।।
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द के, सपनों को साकार करो।
करो परस्पर प्रेम सज्जनों, वेदों का प्रचार करो।।
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम, जग में नाम कमाओ तुम।
लेखराम, गुरुदत्त बनो तुम, वैदिक नाद बजाओ तुम।।
अगर नहीं जागोगे मित्रो! भारी दुःख उठाओगे।
हँसी उड़ाएगी फिर दुनियाँ, तुम अज्ञानी कहलाओगे।।"

आर्य सदन बहीन,
पलवल (हरियाणा)
चलभाष : 9813845774

नारी गर फिसले

लड़का वर्षों तक लड़का ही रहता।
लड़की कुछ पलों में औरत हो जाती।।

नारी ने नर को गगन पर चढ़ाया।
नर ने नारी को पतन पर चलाया।।
खुद मौज मजे से कोठियों में रहा।
बेबस अबला को कोठे पर बिठाया।।

लड़का नशा करे, कोई बात नहीं।
लड़की दम मारे, हैरत हो जाती।।

रूढ़ियों के तले डांट फटकार मिले।
सहमी आँखों से नित अश्रुधार चले।।
शक के बिन्दु पर, नर–नारी त्यागे।
नर के दोषों को लगाती नार गले।।

लड़का भटके भी तो पवित्र रहता।
नारी गर फिसले, गैरत हो जाती।।

दिलचस्प
चूरू, 331001 (राजस्थान)

भारत वर्ष की नींव गाय और गुरुकुलों पर टिकी है

● खुशहाल चन्द आर्य

किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व को तीन गुणों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। पहला बल दूसरा बुद्धि और तीसरा चरित्र। गाय और गुरुकुल इन तीनों गुणों को बढ़ाने वाले होते हैं। इसीलिए प्राचीन भारत में गऊओं का पालन अैर गुरुकल शिक्षा पद्धति ही अधिक चलती थी तभी भारत "विश्वगुरु" तथा "सोने की चिड़िया" कहलाता था। अंग्रजों के आने से पहले तक भी गाय का पालन तथा गुरुकुलों की शिक्षा काफी मात्रा में थी। तभी अंग्रज़ों ने समझ लिया था कि यदि हमें भारत पर शासन करना है तो गो–हत्या चालू करनी पड़ेगी और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति समाप्त करनी पड़ेगी। इसलिए उन्होंने गाय की हत्या के लिए हिन्दू–मुसलमानों में फूट डाली और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के लिए स्कूलों का प्रचलन किया। गुरुकुलों के महत्त्व को घटाकर इंग्लिश स्कूलों का महत्त्व बढ़ाया जिससे जन साधारण ने अपने बच्चों को गुरुकुलों में न भेजकर इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ाना आरंभ कर दिया। इसी से गो–हत्या आरंभ हो गई और गुरुकुलों की संख्या कम होनी लगी।

हमें अफसोस है कि भारत को स्वतंत्र हुए सत्तर साल हो गए लेकिन कॉग्रेस सरकार ने इन दोनों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। अब देश का सौभाग्य उदय हुआ है, देश का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जैसा त्यागी, तपस्वी, ईमानदार व परिश्रमी व्यक्ति जो हिन्दुत्त्व की भावना से ओत–प्रोत है साथ ही पूज्य योगाचार्य स्वामी रामदेव जी महाराज गुरुकुलों में पढ़े हुए हैं और महर्षि दयादन्द के अनन्य भक्त हैं। वे मोदी जी के मार्ग दर्शक हैं। अब हमें पूरी उम्मीद है कि इन दोनों की तरफ सरकार पूरा ध्यान देगी और देश पुनः उन्नत व समृद्धशाली बनेगा।

प्रश्न उठता है कि गाय और गुरुकुलों से देश उन्नत और समृद्धशाली कैसे बनेगा? हम ऊपर लिख चुके हैं कि देश को उन्नत और समृद्धशाली बनाने के लिए तीन गुण–बल, बुद्धि और चरित्र की आवश्यकता होती है। ये तीनों गुण गाय और गुरुकुलों में विद्यमान है। गाय केवल घास खाकर, उसके बदले में दूध, घी, दही, मक्खन व छाछ आदि पौष्टिक व उपयोगी चीज़ देती है जिनके खाने से शरीर बलिष्ठ तथा हृष्ट–पुष्ट होने के साथ–साथ सुन्दर व आकर्षक भी बनता है। गाय का दूध पीने से बुद्धि पवित्र व सात्त्विक बनती है साथ ही बुद्धि की वृद्धि होती है जिससे मनुष्य के विचार सात्त्विक होने से वह चरित्रवान भी बनता है। इसी प्रकार गुरुकुलों में संस्कृत और वेद पढ़ने से विद्यार्थियों बुद्धि निर्मल व सात्त्विक बनती है। पच्चीस वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचारी रहने से विद्यार्थी बलिष्ठ व चरित्रवान बनता है। बुद्धि पवित्र और सात्त्विक होने से उसमें मानवता के सभी गुण जैसे दया, करुणा, सहृदयता, परोपकारिता, निष्पक्षता, सच्चाई, ईमानदारी, साहस आदि गुण स्वयमेव आ जाते हैं और वह एक पूर्ण मानव बन जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मानवीय गुण आने के गाय और गुरुकुल दो ही माध्यम हैं। इनके ऊपर हम अधिक विशेष चर्चा करते हैं–

गाय – गाय मनुष्य का सर्वोत्तम सहयोगी है। मानव को पूर्ण मानव बनाने में गाय का सबसे अधिक योगदान होता है। वैसे तो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में प्रकृति की सब चीजें तैयार करके यानि पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, नदी, नाले, पहाड, वन, पशु–पक्षी, कीट–पतंग सब मनुष्यों के लिए बनाए। मनुष्य इन सभी में से किसी का प्रयोग, किसी का सहयोग, किसी का उपयोग करता है जैसे गाय, भैंस, बकरी, दूध के लिए, घोड़ा, हाथी, ऊँट, सवारी के लिए, सोना, चाँदी, लोहा, लकड़ी प्रयोग के लिए और अन्त में फल, वनस्पति आदि उपयोग के लिए बनाए हैं। हमें इसी प्रकार प्रयोग, सहयोग व उपभोग करना चाहिए। इसी में मानव की मानवता है।

ईश्वर ने जीव की दो किस्म की योनियाँ बनाई हैं। एक भोग योनि और एक कर्म योनि। पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि केवल भोग योनि है। हम में जीव जो कर्म करता है उसको स्वाभाविक कर्म कहते हैं। जैसे खाना पीना, सोना, जागना, उठना–बैठना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कर्मों का जीव को कोई फल नहीं मिलता। परन्तु मनुष्य योनि के साथ–साथ कर्म योनि भी है। साधारण भोग जैसे पशु–पक्षी करते हैं वैसे ही मनुष्य भी योग योनि होने से साधारण कर्म करता है उसका फल मनुष्य को भी नहीं मिलता। लेकिन मनुष्य कर्म योनि भी है इसलिए उसको, उसके किए अच्छे व शुभ कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे व अशुभ कर्मों का फल दुःख के रूप में ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार देता है।

मनुष्य जो कर्म करता है, उन्हें नैमित्तिक कर्म कहते हैं। नैमित्तिक कर्म वे होते है जो सीखने से सीखें जाएँ। माता–पिता बच्चे को चलना सिखाते है और खेलना सिखते हैं तभी बच्चा चलना व बोलना सीखता है। पशु–पक्षी के बच्चे स्वयं ही चलना, बोलना सीख लेते हैं। उनके लिए स्वाभाविक है और मनुष्य के लिए नैमित्तिक है। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ में जब माता–पिता व गुरु कोई नहीं थे। तब ईश्वर ही सब का माता–पिता व गुरु था इसलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को कैसे काम करने चाहिएँ और कैसे काम नहीं करने चाहिएँ, यह जानने के लिए चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे, उनके मुख से चार वेद– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद क्रमशः उच्चारित करवाए जिनको पढ़कर और मनुष्य उनके अनुसार आचरण करके अच्छे कर्मों को करे और बुरे कर्मों को छोड़े जिससे मनुष्य अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके जिसके लिए ईश्वर जीव को उसके कर्मानुसार मुनष्य योनि में भेजता है। इसलिए मनुष्य का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह मानवता के गुण, परोपकार, दया, करुणा, सहृदयता, साहस, निष्पक्षता, मृदुभाषिता, अहिंसा आदि गुणों को अपनावे और अवगुण, काम, क्रोध, मद, लोभ मोह लालच, झूठ, बेईमानी, हिंसा आदि को छोड़ कर अपना उत्तम व श्रेष्ठ जीवन बना कर मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी बने। मनुष्य योनि ही कर्म योनि होने के कारण मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है, इसीलिए मनुष्य योनि को ही मोक्ष का द्वार माना गया है। अन्य योनियाँ भोग योनियाँ होने से वे केवल भोग, भोगकर ही अगली योनि में चली जाती हैं। फिर जीव सब लोगों को अनेक योनियों में भोग कर फिर मनुष्य योनि में आता है और अच्छे कर्मों द्वारा मोक्ष को प्राप्त होता है सब अच्छे कर्मों को ग्रहण करना और सब बुरे कर्मों को छोड़ना हमें वेद जो ईश्वर की वाणी है, सिखाता है। इसके लिए वेद में एक मन्त्र आया है–

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।।

अर्थ – हे सकल जगत् के उत्पत्ति कर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कीजिए और जो कल्याण कारक गुण कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

इन सब शुभ कर्मों का करना और अशुभ कर्मों को छोड़ना विशेषतः हमें गो पालन और गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही सिखलाती है। गाय के दूध, घी, दही, मलाई, छाछ से हमारी बुद्धि पवित्र और सात्विक बनती है जिससे हम बुरे कर्मों को छोड़ते हैं और अच्छे कर्मों को करते हैं। इसी प्रकार गुरुकुलों में बच्चे पच्चीस वर्षों तक ब्रह्मचारी रहकर वेदों को पढ़कर अपने जीवन को पवित्र के साथ–साथ बलवान व पुष्ट भी बनाते है। इसलिए इन दोनों की ओर मनुष्य को अधिक ध्यान देना चाहिए। गायों के सम्बन्ध में भी वेदों में मन्त्र आये हैं:–

गावो विश्वस्य मातरः– अर्थ–गाय विश्व की माता है।

गावो यत्र ततः सुखम् :– अर्थ–जहाँ गाय है वहीं सुख है।।

वेदों ने भी गाय को माता कहा है। माता तो बच्चे को केवल तीन या चार वर्ष ही दूध पिलाती है। परन्तु गाय तो उम्र भर मनुष्यों को दूध पिलाती है इसलिए गाय को माता मानना उचित है साथ ही गाय मनुष्य पर अनेक उपकार करती है। उसके गोबर, गोमूत्र से उत्तम श्रेणी की खाद बनती है जिससे ज़मीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। गाय के गोबर, गोमूत्र व दूध, घी, दही से अनेक किस्म की दवाइयाँ बनती हैं जो काफी लाभदायक सिद्ध हो रही हैं। गाय के बछड़े हल जोतते है और गाड़ी खीचते है इस प्रकार गाय मनुष्य के लिए बड़ी लाभदायक है। भारत एक कृषि–प्रधान देश है और गाय का कृषि के लिए गोशालाओं को अधिक से अधिक खोलकर गो रक्षा करना और अधिक से अधिक खोल कर वेद प्रचार करना आज की सब से अधिक आवश्यकता है। इन्हीं दो कार्यो पर भारत की उन्नति व समृद्धि टिकी हुई है। इसलिए हमें इन दोनों कामों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
180 महात्मा गाँधी रोड
दो तल्ला कोलकाता–700007

☞ पृष्ठ 06 का शेष

कज्जल दर्पण ...

जाती हैं, जो नवदम्पती के युगल जीवन में ही नहीं, वर–कन्या दोनों पक्षों के समग्र पारिवारिक जीवन हेतु मंगलकारिणी होती है। यथा–

ओं जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्ति पावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्रानुसंव्ययस्वा युष्मतीदं परिधत्स्वः वासाः।। ओं यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती। यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।। पार. गृह.।।

अभी जो उपरिवस्त्र वर–कन्या धारण करें, वे यह भावनाए सुदृढ़ कर जाएँ जिनसे नव दम्पति आजीवन धन–वैभव–यश से परिपूरित बने रहकर अपना, परिवार का, समाज का और राष्ट्र का ऐश्वर्य–सम्मान बढ़ाते रहें। अर्द्धांगिनी की चुनरी के चीर के स्पर्श मात्र से स्नेह भावनाएँ स्फुरण कर उठती हैं, वैसे ही इस काले कलूटे वस्त्र के विचार मात्र से कज्जल दर्पण प्रकट होकर भारत भूमि के उज्ज्वल दृश्य प्रस्तुत कर देता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार राम–कृष्ण आदर्श योगीराज श्यामवर्ण किन्तु आप्त पुरुष हैं। इनका अनुसरण करने पर मनुष्य उज्ज्वल मुखी बनता है।

या अनुरागी चित्त की गति समुझहि नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बाढ़े श्याम रंग त्यों त्यों उज्ज्वल होय।।

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्र.)
रामघाट मार्ग,
अलीगढ़–202001, (उ.प्र.)

गुरु पूर्णिमा

● भद्रसेन

गुरु–पढ़ना–लिखना सिखाने वाले को कहा जाता है। पूर्णिमा उस दिन होती है, जब चन्द्रमा अपनी सारी कलाओं=योग्यताओं, क्षमताओं के साथ चमकता है। अतः दोनों शब्दों का साँझा भान हुआ कि गुरु चन्द्र की तरह अपने शिष्य के जीवन को शीतल चादनी से चमका देता है। अतः सरलता से ज्ञान–रस द्वारा जीवन को सरस=सफल बनाने वाले को गुरु कहा जाता है। तभी तो यह वचन प्रचलित है–

अज्ञानान्धतिमिरस्य ज्ञानाञ्जनशलाकयाँ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अज्ञान के घुप अंधेरे से भरे जीवन रूपी चक्षु को ज्ञान रूपी अञ्जन सलाई से प्रकाशयुक्त करने वाला गुरु सत्कार का पात्र है। निरुक्तकार आचार्य यास्क ने गुरु के स्थान पर *आचार्य शब्द सुझाया है। इसके समग्र* स्वरूप को स्पष्ट करते हुए समझाया है।

1. वह शिष्य को सामाजिक जीवन में शिष्टाचार सिखा कर वर्तन बताता है।

2. इसके लिए जीवन में समय–समय पर बर्ते जानी वाली वस्तुओं, बातों, मशीनों, व्यवहारों का परिचय कराता है जैसे बोलचाल के शब्दों, उनके अर्थों और उनके परस्पर सम्बन्धों को समझाता है।

3. व्यक्ति की बुद्धि भी प्रसंगवश जीवन में आने वाले सम्बन्धित व्यवहारों को स्वयं समुचित रूप से करने में सक्षम हो, क्योंकि कोई भी किसी को सब कुछ नहीं पढ़ा सकता। अतः स्वयं निर्णय लेने की क्षमता अत्यन्त आवश्यक है।

पढ़े–लिखे को साक्षर कहते हैं अर्थात् जो अक्षरों के साथ है=स+अक्षर। जिसका भाव है, कि जो अक्षरों के अनुरूप वर्तता=जीता है। उससे विपरीत चलने वाला साक्षर नहीं+राक्षस है। यतो हि साक्षर के वर्ण उलट देने से वह राक्षस पढ़ा जाता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने सर्वत्र विद्या–शिक्षा शब्दों को मिलाकर प्रयोग किया है। अर्थात् चाल–चलन युक्त पढ़ा–लिखा ही पूर्ण पुरुष है। इसीलिए वेद प्रार्थना के माध्यम से संदेश देता है:–

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्।
यथेह पुरुषोऽसत्।। यजु.

भावार्थ– पितरः = शिक्षा के माध्यम से पालन करने वालो! गर्भम्= विद्या ग्रहण की तड़प, जिज्ञासा रखने वाले कुमारम्= विद्या को समझने की अवस्था वाले और पुष्करस्रजम्=कमलवत्निर्लिप्तअर्थात्राग–द्वेष, मद, मत्सर, द्रोह आदि दोषों, दुराग्रहों से शून्य को आ धत् = अपनी व्यवस्था, अनु–शासन में सँभालो, रखो। इह= इस जीवन के प्रथम आश्रम, विद्या अभ्यास के काल में यथा= जैसे (तथा= इस की ऐसी दिनचर्या, जीवनचर्या करो, चलाओ) जिससे यह पुरुषः= पूर्ण, सर्वांगकलासम्पन्न असत्= हो जाए, बन जाए। विकलांग, अधूरा न रहे।

व्याख्या– मन्त्र में आए शब्द अपने–अपने अर्थ में प्रसिद्ध हैं, अतः यहाँ शब्दार्थ न लेकर प्रकरण वाला भाव ही लिया है। अनेक शास्त्रों में शिक्षा देने वालों को भी पितर कहा है। निरुक्त में किसी प्राचीन शास्त्र के श्लोक हैं– विद्या वै ब्राह्मणं–

इनमें विद्या को खजाना बताते हुए इसकी रक्षा की बात की है। अतः पात्र को ही विद्या दे, जो कि **उपसन्न=** समीप आए, जिज्ञासु भाव से गर्भम्, इदं वित्= इसको समझने में समर्थ (=कुमारम्) **यस्ते न दुह्येत=** जो तरे प्रति द्रोह न करे (=पुष्करस्रजम् हो)।

182–शालीमार
होशियारपुर (पंजाब)

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

भक्त ने कहा– "नहीं महाराज! अभी तो केवल पाँच ही वर्ष का है। मेरा पुत्र है मूर्ख, उसकी देखभाल नहीं कर सकता। कुछ वर्ष और ठहर जाइए, इस बच्चे को बुद्धिमान हो जाने दीजिए।"

नारद जी वापस चले गए। दस वर्ष के पश्चात् पुनः आए। बच्चा जवान हो गया था। भक्त बुड्ढा। उसकी कमर टेढ़ी हो गई थी। आँखे बन्द। लाठी टेककर चलता था। नारद ने कहा– "अब तो चलो, अब तो बहुत विलम्ब हो चुका है।"

बूढ़े भक्त ने चिल्लाकर कहा– "यह तुम बार–बार मेरे ही पास क्यों आते हो? इतना बड़ा संसार है, किसी दूसरे को पकड़ ले आओ। क्या मैं ही स्वर्ग जाने के लिए रह गया हूँ?"

नारद की आँखें खुल रह गईं। दुःख से बोले– "भगवन् ठीक कहते थे, उन्हें कोई नहीं चाहता।"

यह है भक्तों की दशा! और सुनो! धोखे में पड़ गया है संसार; व्यापार करता है। भक्ति करना नहीं चाहता।

ज्ञानी जग में रहत भी लिप्तमान हो नाहिं

एक थे लाला जी। काफ़ी बूढ़े हो गए थे। दाना दलने की एक चक्की थी उनकी। दुकान पर बैठे थे। बूढ़े होने पर भी दाना दल रहे थे। दलते जाते, कहते जाते– "इस जीवन से तो मौत अच्छी है!"

इसी समय एक साधु दुकान के पास से होकर निकले। उन्होंने लालाजी के ये शब्द सुने और सोचा– "कितना दुःखी है यह व्यक्ति! इसकी सहायता करनी चाहिए।" उसके पास जाकर बोले– "लाला, बहुत दुःखी है तू। मेरे पास एक विद्या है। यदि तू चाहे तो तुझे स्वर्ग ले जा सकता हूँ। चलता है तो चल। इस दुःख से छुटकारा मिल जाएगा।"

लाला ने साधु की ओर देखा; बोला– "बहुत दयावान् हो तुम, परन्तु मैं जा कैसे सकता हूँ? इतना बूढ़ा हो गया, अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई। सन्तान हो जाए तो चलूँगा अवश्य।"

साधु ने कहा– "बहुत अच्छा।" और चला गया।

कुछ वर्षों के बाद लाला के दो बेटे हो गए। साधु ने वापस आकर कहा– "चलो लाला! अब तो तुम्हारी सन्तान हो गई।"

लाला ने कहा– "हो तो गई, परन्तु अभी तक वह किसी योग्य तो नहीं। लडके तनिक बड़े हो जाएँ, अब तुम आना। मैं चलूँगा अवश्य।"

लड़के बड़े हो गए। साधु फिर आया तो दुकान पर लाला नहीं था। पूछा उसने कि लाला कहाँ हैं? तो पता लगा कि मर गए। साधु ने योगबल से देखा कि मरकर वह गया कहाँ? तभी पता लगा कि दुकान के बाहर जो बैल बँधा है, वही पिछले जन्म का लाला है। इसके पास जाकर साधु ने कहा– "अब चलेगा स्वर्ग को?"

लाला ने सिर हिलाकर के कहा– "कैसे जाऊँ! बच्चे अभी ना–समझ हैं। मैं चला गया तो कोई दूसरा बैल ले आएँगे। जितनी अच्छी प्रकार मैं बोझ उठाता हूँ, उतनी अच्छी प्रकार वह उठाएगा नहीं। मेरे बच्चों को हानि हो जाएगी। ना भाई! अभी तो मैं नहीं जा सकता, कुछ देर और ठहर जा।"

पाँच वर्ष व्यतीत हो गए। साधु फिर वापस आया। देखा– दुकान के सामने अब बैल भी नहीं है। दुकान के नए स्वामियों ने एक ट्रक खरीद लिया है। उसने इधर–उधर से पूछा कि बैल कहाँ गया? ज्ञात हुआ, बोझ ढोते–ढोते मर गया। साधु ने फिर अपने योगबल से ढूँढा। देखा– वह अपने घर के द्वार पर कुत्ता बन के बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा– "अब तो बोझ ढोने की बात भी नहीं रहीं। अब चल तुझे स्वर्ग ले चलूँ।"

कुत्ते के शरीर में बैठे लाला ने कहा– "अरे कैसे ले चलेगा! देखा नहीं कि मेरी बहू ने कितने आभूषण पहन रखे हैं? मेरे लड़के घर में नहीं, यदि कोई चोर आ गया तो बहू को बचाएगा कौन? नहीं बाबा! तुम चले जाओ, अभी मैं नहीं जा सकता।"

साधु चला गया। एक वर्ष के बाद वापस आकर उसने देखा कि कुत्ता भी मर गया। उसने फिर योगबल के द्वारा उसे खोजा। ज्ञात हुआ कि वह अपने घर के पास बहने वाली गन्दी नाली में मेंढक बन के बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा– "देखा लाला! क्या इससे बड़ी दुर्गति भी कभी होगी? कहाँ से कहां पहुंच गए हो तुम! अब भी मेरी बात मानो। आओ तुम्हें स्वर्ग ले चलूँ।"

मेंढक ने चिल्लाकर कहा– "चला जा यहाँ से! क्या मैं ही रह गया हूँ स्वर्ग जाने के लिए? और लोग क्या मर गए हैं? उनको ले जा। मुझे यहीं पड़ा रहने दे। यहाँ पोतों को आते–जाते देखकर प्रसन्न होता हूँ। स्वर्ग में क्या मैं तेरा मुख देखा करूँगा?"

यह है मोह के चक्र में फंसे रहने का परिणाम! यह मोह आत्मा को नीचे–ही–नीचे धकेलता चला जाता है। नहीं, इस प्रकार कर्म मत करो। कर्म करो अवश्य, मोह और ममता से परे हटकर।

जूँ जल भीतर कँवल रहे, जल में डूबे नाहिं।

ज्ञानी जग में रहत भी, लिप्तमान हो नाहिं।

खुदा की बस्ती दुकान नहीं है

वन में बैठे युधिष्ठिर जी महाराज ध्यान में मग्न हुए। ध्यान से उठे तो द्रोपदी ने कहा– "महाराज! इतना भजन आप भगवान् का करते हो, इतनी देर तक ध्यान में बैठे रहते हो, फिर उनसे यह क्यों नहीं कहते कि इन संकटों को दूर कर दें? इतने वर्षों से आप और दूसरे पांडव वन में भटक रहे हैं। इतना कष्ट होता है, इतना क्लेश! कहीं पत्थरों में रात्रि व्यतीत करनी पड़ती है, कहीं काँटों में। कभी प्यास बुझाने को पानी नहीं मिलता, कभी भूख मिटाने को खाना नहीं। फिर आप भगवान् से क्यों नहीं कहते कि इन कष्टों का अन्त कर दें?"

युधिष्ठिर बोले– "सुनो द्रोपदी! मैं भगवान् का भजन करता हूँ तो सौदे के लिए नहीं। मैं भजन करता हूँ केवल इसीलिए कि भजन करने में आनन्द मिलता है। वह सामने फैली हुई उस पर्वतमाला को देखो! उसे देखते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। हम उससे कुछ माँगते नहीं। हम देखते हैं इसलिए कि देखने में प्रसन्नता होती है। इसी प्रसन्नता के लिए मैं भगवान् का भजन करता हूँ।"

आज लोग कहते हैं– "इतने घण्टे जाप किया, इसके बदले हमें क्या मिलेगा?" कुछ नहीं मिलेगा। याद रखो– यह जाप नहीं, व्यापार है।

क्रमशः

पत्र/कविता

भारत का सरकारी सम्वत्/कैलेण्डर कौन सा है?

देश में नौ तरह के सम्वत् प्रचलित हैं। शक सम्वत् 78 ईस्वी में, कुषाण शासक कनिष्क द्वारा स्थापित किया गया। दीर्घकाल तक शकों द्वारा प्रयोग में लाए जाने के कारण यह शक सम्वत् कहलाया।

भारत सरकार ने सरकारी उद्देश्य के लिए 22 मार्च 1957 को राष्ट्रीय पंचांग/कैलेण्डर शक सम्वत् कैलेण्डर को अपनाया। भारतीय राष्ट्रीय पंचांग/कैलेण्डर शक सम्वत् पर आधारित है। 78 ईस्वी में शुरु हुए शक सम्वत् का पहला महीना चैत्र का है। ग्रिगेरियन कैलेण्डर का भी यही आधार है। राष्ट्रीय कैलेण्डर के अनुसार एक वर्ष में 12 महीने या 365 दिन होते हैं। ग्रिगेरियन कैलेण्डर और शक सम्वत् की तिथियों में स्थायी रुप से समानता है शक सम्वत् (सरकारी कैलेण्डर) के अनुसार वर्ष का प्रारम्भ चैत्र प्रथम तिथि को होता है जो ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार सामान्य वर्षों में 22 मार्च को तथा लीप वर्ष में 21 मार्च को पड़ता है। मुख्य रूप से राष्ट्रीय पंचाग (कैलेण्डर) जिन सरकारी उद्देश्यों के लिए अपनाया गया है वे निम्न हैं:–

(1) आकाशवाणी के समाचार प्रसारण (2) भारत का राज पत्र (3) भारत सरकार द्वारा जारी कैलेण्डर (4) भारत सरकार द्वारा जारी सार्वजनिक विज्ञप्तियाँ आदि।

इस कैलेण्डर का 12वां महीना फाल्गुन का होता है। इसके महीनों को कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष में नहीं बाँटा जाता है। जनता को इस कैलेण्डर को अपनाकर इसे लोक प्रिय बनाना चाहिए। 22 मार्च 2018 को 01–01–1940 प्रारम्भ हुआ है। दोनों कैलेण्डरों में 78 वर्ष का अन्तर रहता है।

इन्द्र देव गुलाटी
18/186, टीचर्स कालोनी
बुलन्दशहर (उ.प्र.) 203001

पूजनीय वृक्ष हमारे

पूजनीय वृक्ष हमारे, शुद्ध वायु कीजिए।
वायु दूषित दूर करके, प्राणवायु दीजिए।। 1।।
ज़रूरी है प्राणवायु, देखो, हर जीव–जन्तु के लिए।
रक्षार्थ मानव का कर्त्तव्य यही, तत्पर दिख हर वृक्ष के लिए।।2।।
एक बचाते हैं जब तलक, सैकड़ों कट जाते हैं तभी।
कैसे पूजन करें हे वृक्षदेव, लज्जित हैं हम सभी।।3।।
अशोक के दर्शन होते नहीं, भला शोक कैसे मिटेगा।
न है वटवृक्ष, न है सावित्री, सोचो कैसे सौभाग्य बढ़ेगा।।4।।
कमल, केवड़ा, दर्भ, दूर्वा, कुश और आम हमारे पूजनीय हैं।
तुलसी न रही जग में, कैसे कहोगे–तुलसी विवाह वन्दनीय है।।5।।
च्यवन ऋषि च्यवनप्राश देकर, आंवला तेल से केश काले कर गए।
न केवल धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाएँ, पौधारोपण करें नित नए।।6।।
पिप्पलाद ने खाए पीपल के फल, होते थे वे भी शक्ति भरे।
प्राणवायु देते रहते रात–दिन, हर व्यक्ति अभिनन्दन करे।।7।।
वृक्षों को नमन है "वेद" करता, वृक्ष समिधा दान करें।
फूल–फल, जड़ी–बूटियाँ देकर, यज्ञ से पावन वर्षा करें।।8।।
वृक्ष लगाएँ, यज्ञ रचाएँ, प्रभुवर सुबुद्धि ऐसी दीजिए।
नारी–नर होवें सभी वृक्षप्रेमी, भाव उज्ज्वल कीजिए।।9।।

वेदप्रकाश शास्त्री
शास्त्री भवन, 4–ई, कैलाश नगर
फाजिलका 152123 पंजाब
मो. 946342899

आर्य समाज और वृद्ध आश्रम

देश के समस्त आर्य समाजों के प्रबन्ध कर्ताओं से नम्र निवेदन है कि समय की आवश्यकतानुसार यदि आर्य समाज परिसरों में ''वृद्ध आश्रम'' की स्थापना करने का प्रयास किया जाये तो महर्षि स्वामी दयानन्द जी के आदर्शों को प्रोत्साहन मिलेगा।

यह सर्वविदित है कि समाज में वरिष्ठ नागरिकों की संस्था तेज़ी से बढ़ रही है। योगक्षेम का अभाव है अर्थात् अधिकांश परिवार अब एकल जीवन व्यतीत कर रहे है। वरिष्ठ नागरिक (स्त्री हो या पुरुष) को अन्तिम यात्रा तक जीवन व्यतीत करने हेतु आश्रय की आवश्यकता पड़ती है जिसमें शान्ति मिल सके। यह प्रसन्नता है कि अनेक धार्मिक संस्थानों मे वृद्ध आश्रमों के संचालन की प्रवृति तेजी से पनप रही है।

वृद्धों की सेवा ईश्वर की सेवा है। विश्वास है कि देश के समस्त आर्य समाज इस समस्या का निदान करने का यथासम्भव प्रयास करेगा।

कृष्ण मोहन गोयल
113, बाजार कोट, अमरोहा 244221
मो. 9927064104

****

वैदिक उपदेशक विद्यालय, लखनऊ

सब सज्जनों के सूचनार्थ निवेदन है कि उत्तर प्रदेश के लखनऊ नगर में वैदिक उपदेशक विद्यालय स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु समर्पित प्रचारक तैयार करना है। विद्यालय में पाँच विषय पढ़ाए जायेंगे:–**1 संस्कृत व्याकरण, 2 भारतीय दर्शन, 3 वेद (उपनिषत् सहित), 4 ऋषि दयानन्द, 5 योग।**

विद्यार्थियों का आवासन, अध्ययन एवं भोजन निःशुल्क होगा; उन्हें कोई उपाधि (डिग्री) नहीं दी जाएगी; शनैः–शनैः संस्कृत को संवाद की भाषा बनाया जाएगा। प्रवेश के नियम तथा अन्य विवरण निम्न प्रकार हैं:–

1. **न्यूनतम अर्हताएँ :**

(क) हिन्दी, अंग्रजी अथवा संस्कृत का सामान्य ज्ञान हो;

(ख) वर्णोच्चारण की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी;

(ग) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत हो;

(घ) शरीर स्वस्थ और नीरोग हो;

(ङ) आयु 15 वर्ष और 35 वर्ष के बीच हो।

2. **कार्यारम्भ :** ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा, वैक्रमाब्द 2075; बृहस्पतिवार; 14 जून, 2018 से।

3. **संचालक :** आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक' एम.एस–सी (गणित); पी–एच.डी. (दर्शन–शास्त्र); बी.एड.; व्याकरणाचार्य; न्याय–विशारद; वेद–भूषण। मो. 9839181690 ईमेल–rcdeepak@yahoo.com

4. **पता :** वैदिक उपदेशक विद्यालय; 1393, एल्डिको उद्यान–2 रायबरेली रोड, लखनऊ 226025

5. **दूरभाष संख्या :** 7376987931

प्रबोध आर्य, सचिव
मो. 9936827199

डी.ए.वी. स्कूल कुमारगंज में हुआ नए सत्र का प्रारम्भ

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय परिसर स्थित डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में नये सत्र का प्रारम्भ हो गया। इस शुभ अवसर पर विद्यालय में वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान प्रधानाचार्य श्री एस. के. श्रीवास्तव रहे। विद्यालय के धर्मशिक्षक श्री मनोज कुमार नें वैदिक मंत्रों के साथ यज्ञ की शुरुआत की जिससे आसपास का वातावरण वैदिक ध्वनियों से गुंजायमान हो गया विद्यालय के समस्त शिक्षक/शिक्षिकाओं व छात्र/ छात्राओं ने पूर्णाहुति डाली।

प्रधानाचार्य जी ने अपने उद्बोधन में हवन के माध्यम से होने वाले परिवर्तन तथा महत्त्व पर भी विस्तार से बताते हुए बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की। प्रधानाचार्य जी ने आश्वासन देते हुए कहा कि किसी भी छात्र या छात्रा को किसी भी प्रकार की कोई समस्या होती है तो वह निःसंकोच अपनी समस्या को कहे यथा सम्भव समस्या को दूर करने के पूरे प्रयास किये जायेंगे।

डी.ए.वी. दुर्गापुर में महात्मा हंसराज जन्मदिवस का आयोजन

आर्य समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर में पापिया मुखर्जी (प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, *पश्चिम बंगाल) के दिशानिर्देशन में महात्मा* हंसराज जन्मदिवस मनाया गया। महात्मा हंसराज जन्मदिवस का आरंभ बृहद् यज्ञ से किया गया जिसकी मुख्य यज्ञमान स्वयं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल की प्रधान पापिया मुखर्जी रहीं। यज्ञ में आर्य समाज के मन्त्री संजय मजुमदार, कोषाध्यक्ष सुप्रियो दास और सभी सदस्यों ने कक्षा आठवीं–नौवीं के छात्र–छात्राओं के साथ श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

यज्ञ के पश्चात् प्राचार्य महोदया ने सभी सदस्यों और छात्रों के संबोधित करते हुए महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला। कुछ और सभासदों ने महात्मा हंसराज जी और आर्य समाज के विषय में अपने–अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किए।

यज्ञ के पश्चात् आठवीं और नौवीं के छात्रों की वैदिक प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता हुई। प्रश्नोत्तरी के मुख्य विषय आर्य समाज के चार स्तम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज जी, स्वामी श्रद्धानंद जी और पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी थे। छात्र–छात्राओं ने इन चारों महापुरुषों के विषय में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर पूर्ण विद्वत्ता से दिये। गांधी हाऊस से बिजितेश विशाल सिंह, मेहुल पटवारी, सिया श्रीवास्तव, दिव्या सिंह ने प्रथम स्थान और दयानंद हाऊस से आकाश गुप्ता, कंचन सिंह, प्रत्यूष विश्वास अनुष्का साहा ने दूवितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के बाद विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षकों ने कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए।

आर्य समाज पूण्डरी ने मनाया आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज पूण्डरी के तत्त्वावधान में 51 कुण्डीय सत्य सनातन वैदिक संस्कृति रक्षा महायज्ञ का आयोजन पूण्डरी की आनाज मण्डी में किया गया। भारतीय नवसंवत् 2075 के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य ज्ञान चन्द शास्त्री जी भिवानी एवं मुख्य वक्ता स्वामी यज्ञमुनि जी महाराज, वैदिक अनाथालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश रहे। कार्यक्रम में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान कुलवन्त सैनी जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। आर्य समाज के महामंत्री श्री अनिल आर्य ने आए हुए महानुभावों को ओ३म पट्टिका पहनाकर स्वागत किया। उन्होंने आर्य समाज पूण्डरी द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती साधना बख्शी ने की।

स्वामी यज्ञमुनि जी महाराज ने बताया कि इस संसार को श्रेष्ठ मार्ग पर ले जाने वाले आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द जी ने इसी दिन की थी। प्राचार्या ने बताया कि आर्य समाज डीएवी की माँ हैं। आर्य समाज में कार्य करना अपने माता–पिता की सेवा करने के समान है। सदस्यों को इस बृहद् यज्ञ के सफलतापूर्वक आयोजन की बधाई दी।

पूण्डरी क्षेत्र के लगभग 300 परिवारों ने सम्मिलित होकर आहुति डाली। आर्य समाज और डीएवी मिलकर भविष्य में भी इस तरह के आयोजन करता रहेंगे।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

उमा शंकर चंपा देवी ...

लेखन, कक्ष–सज्जा व रंगोली इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दूसरे दिन के मुख्य अतिथि श्री गुप्तेश्वर पाण्डेय, डी.जी.पी, बी.एम.पी., बिहार थे। उन्होंने कहा डी.ए.वी. सस्थाएँ वेद और विज्ञान का विकास एवं व्यक्ति और समष्टि सबका कल्याण चाहती हैं। अपनी ओजस्वी, क्रांतिकारी वाणी से उन्होंने शिविरार्थियों में देश भक्ति की भावना का जागरण किया। तत्पश्चात अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

तीसरे दिन निकाली गई शोभा यात्रा में सामाजिक कुरीतियों अंधविश्वासों, सामाजिक विसंगतियों एवं प्रचलित पाखंडों के विरुद्ध दर्जनों झाँकियाँ महाराजगंज विद्यालय से राजेन्द्र चौक, बाटा मोड़, सुमन चौक होते हुए बोर्ड मिडिल फील्ड तक गई।

समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एम.सी. शर्मा, वाइस चेयरमैन, एल. एम. सी. महाराजगंज तथा आनररी ट्रेजरर डी ए वी सी एम सी नई दिल्ली ने की। इस अवसर पर डॉ यू एस, प्रसाद, प्रधान आर्य प्रदिशिक प्रतिनिधि उपसभा बिहार, श्री के. के. सिन्हा, क्षेत्रीय निदेशक, भागलपुर, श्री एस. के. जना क्षेत्रीय निदेशक, आरा, की गौरवमयी उपस्थिति रही।

यज्ञ के उपरांत सभी प्रतिभागियों में विजेताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. के. झा. ने अतिथियों का आभार प्रकट किया। उन्होंने शिविरार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों छात्र स्वंयसेवकों एवं नगरवासियों की भूरि–भूरि प्रंशसा की। विद्यालय के प्राचार्य श्री अविनाश चन्द्र झा एवं प्रबन्धक श्रीमती नीलम सिंह व सरंक्षक श्री सुगेन्द्र सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ओ३म् ध्वज अवरोहण, वैदिक राष्ट्रीय गाान, जयघोष एवं शांति पाठ से शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

डॉ. ज्वलन्त शास्त्री, डॉ. सज्जवीनी पाण्डेय का इस शिविर की सफलता में विशेष योगदान रहा।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 09/10-05-2018

सामाजिक जुड़ाव हेतु यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन डी.ए.वी. कोटा की नई पहल

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि [illegible] राज[illegible] एव[illegible] न संध्या का आयोजन किय[illegible] र्यक्रम डी.ए.वी स्कूल के प्रांगण [illegible] कर कोटा नगर के उपक्षेत्र मह[illegible] में आयोजित किया गया। [illegible]में विद्यालय के स्टाफ के साथ स्थानीय लोगों की भी उपस्थिति रही। **विद्यालय प्राचार्य, क्षेत्रीय निदेशक एवं मंत्री आर्य प्रादेशिक उपसभा, राजस्थान श्रीमति रंजन गौतम** ने कहा कि यह इस श्रंखला का प्रथम आयोजन है डी.ए.वी शहरभर में इस प्रकार के सामाजिक सरोकार से जुड़े आयोजन आगे भी करता रहेगा।

कार्यक्रम का शुभारंभ देवयज्ञ से हुआ। इस यज्ञ के ब्रह्मा विद्यालय के धर्म शिक्षक श्री शोभाराम आर्य तथा यजमान **विद्यालय प्राचार्या, श्रीमति सरिता रंजन गौतम**, डी.ए.वी झालवाड़ के **प्राचार्य श्री राजकुमार शर्मा**, आर्य के जिला प्रधान **श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा** एवं अन्य क्षेत्रीय निवासी थे। उपस्थित सभी गणमान्य लोगों ने क्रमशः यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कीं।

तत्पश्चात आरंभ हुआ भजन संध्या का आयोजन जिसमें एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों ने समा बाँध दिया। कोटा के संगीत शिक्षक **श्री मुक्तेश शर्मा, श्री तुलसीदास वर्मा, डी.ए.वी गढेपान के संगीत शिक्षक श्रीमति मीनू मिश्रा, श्री कमलेश सरोलिया, डी.ए.वी** झालावाड़ के संगीत शिक्षक श्री राजेन्द्र चौहान ने भक्तिमय प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कुछ स्थानीय लोगों ने भी इस अवसर पर अपनी भक्तिमय प्रस्तुतियाँ दी कार्यक्रम का अगला सोपान था विद्यालय के धर्म शिक्षक **श्री शोभाराम आर्य** का ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् विषय पर प्रवचन जिसमें उन्होंनें वेदों के अनेक उद्धरण देकर यह बताया कि ईश्वर अनन्त गुणयुक्त परम सत्ता है वह निराकार, सर्वज्ञ, अनादि एवं अनतं हैं। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्राचार्या, श्रीमति सरिता रंजन गौतम ने धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि सफल आयोजन समाज और स्टाफ के परिश्रम व समन्वय का सुफल है। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रद्युम्न शर्मा ने किया। उपस्थित जन समुदाय हेतु प्रसाद एवं जलपान का वितरण भी किया गया।

बी.बी.के. डी.ए.वी कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर में महिला अधिकारों पर सेमीनार

बी.बी.के. डी.ए.वी कॉलेज फॉर विमेन में जिला लीगल सर्विस अथॉरिटी एवं कॉलेज के लीगल लिट्रेसी क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में महिला–अधिकारों पर सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमीनार का मुख्य प्रयोजन छात्राओं को उनके अधिकारों एवं कानूनी सहायता से अवगत करवाना था। व्याख्यान श्रृंखला के प्रमुख वक्ता रहे– डी.एल.एस.ए. के सदस्य श्री एस.पी. धंजल, अधिवक्ता बाल कृष्ण, श्री अजायब सिंह और श्री हरजीत सिंह।

इस अवसर पर घरेलू हिंसा कानून से महिला–संरक्षण, पैंशन–योजना, वरिष्ठ नागरिकों के लिए कानूनी सहायता, मनरेगा स्कीम और भवन निर्माण श्रमिक जैसे मुख्य विषयों पर चर्चा की गई। छात्राओं द्वारा इस सैमीनार की सराहना की गई।

प्राचार्य डॉ. पुष्पिन्दर वालिया ने जर्नलिज्म विभाग की इस आयोजन के लिए प्रशंसा की। इस अवसर पर कॉलेज की वाइस प्रिंसिपल श्रीमति मंजु दुग्गल के साथ श्रीमति रेणु भण्डारी, डॉ अन्नीता नरेन्द्र, श्रीमति रेणु वशिष्ठ एवं डॉ. प्रियंका बस्सी सहित महविद्यालय की छात्राएँ उपस्थित रहीं।

सोहन लाल डीएवी गर्ल्स सी.सै. विद्यालय में महात्मा हंसराज जयंती

सोहन लाल डीएवी गर्ल्स सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में 'महात्मा हंसराज जन्मोत्सव' बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में 'भजन वेला' का आयोजन किया गया जिससे विद्यालय का प्रांगण संगीत माधुर्य से सराबोर हो गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में स्कूल मैनेजर डॉ. श्री विवेक कोहली जी ने शिरकत की जिन्होंने ज्योति प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण द्वारा कार्यक्रम की शुरूआत की।

महात्मा हंसराज जी के जीवन से संबंधित एक लघु नाटिका सातवीं कक्षा के बच्चें द्वारा प्रस्तुत की गई जिसे देखकर सभी भावविभोर हो गए व तालियों की गड़गड़ाहट द्वारा सभी ने इसकी प्रशंसा की। दसवीं कक्षा की छात्रा खुशी ने महात्मा हंसराज जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए सभी को उनके जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाओं के बारे में बताया व दसवीं कक्षा की छात्रा महक ने कविता के माध्यम से सभी को महात्मा हंसराज जी की विशेषताओं से अवगत कराया।

डॉ. विवेक कोहली जी ने महात्मा हंसराज जी के जीवन के बारे में सभी को ज्ञानवर्धक जानकारी देते हुए कहा कि अनेकों युगों के बाद ऐसे महापुरूष का जन्म होता है, जो संसार को सन्मार्ग दिखाते हुए ऐसा सुधार करता है कि जिससे संसार का दृष्टिकोण ही बदल जाता है व अनेकों युग सुधर जाते हैं। स्कूल की प्राचार्या श्रीमती नीलम मलिक जी ने महात्मा हंसराज जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए सभी को उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया व आशा व्यक्त की कि आने वाले समय में भी हम महात्मा जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए समाज सुधार की दिशा में कार्यरत होंगे व एक प्रगतिशील व उन्नत समाज की निर्माण करेंगे। इस असवर पर विद्यालय में 'लंगर' का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने प्रसाद को ग्रहण किया

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**